श्री शान्तिनाथाय नम

॥ आचार्यदेव श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरगुरुभ्यो नम ॥

❀ बिखरे फूल ❀

लेखक —

पू० आचार्यदेव श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज के विद्वान् शिष्यरत्न पू० प० श्री भानुविजयजी गणीवर के शिष्यरत्न मुनि श्री

जितेन्द्र विजय

वीर सम्वत् २४८७

मूल्य ५० नये पैसे

समर्पण

○

सकलागमरहस्यवेदी परमगीतार्थ स्व० पू० आचार्यदेव

श्रीमद् विजयदानसूरीश्वरजी के पट्टालंकार

वात्सल्यवारिधि सिद्धान्तमहोदधि कर्मशास्त्र

के प्रखर विद्वान परमपूज्य आचार्यदेव

श्री विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज साहब

के कर-कमलों में।

चरण किंकराणु
—जितेन्द्रविजय

श्री द्रव्यानुयोग-कर्मसाहित्यचिंतनशील प. पू० आचार्यदेव

श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराजा

निर्मलयश प्रतापा परमसुखवनी प्रौढ हे प्रेममूर्ति
वात्सल्याब्धि मुनीश चरणगुणनिधि सयमे भव्यमूर्ति।
ज्ञाता सर्वागमोना जिनमतगगन सूर्य शा धर्मधुरि,
स्वीकारो वन्दनाने भविजनगणनी हे प्रभो! प्रेमसूरि।
जन्म दिवस १९४० (पिंडवाड़ा) दीक्षा १९५७ पंन्यासपद १९८१
उपाध्यायपद १९८७ तथा आचार्यपद १९९१ (राधनपुर)

समर्पण

O

सकलागमरहस्यवेदी परमगीतार्थ स्व० पू० आचार्यदेव

श्रीमद् विजयदानसूरीश्वरजी के पट्टालंकार

वात्सल्यवारिधि सिद्धान्तमहोदधि कर्मशास्त्र

के प्रखर विद्वान परमपूज्य आचार्यदेव

श्री विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज साहब

के कर-कमलों में ।

चरण किंकराणु

—जितेन्द्रविजय

श्री द्रव्यानुयोग-कर्मसाहित्यचिंतनशाल प॰ पू॰ आचार्यदेव

श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराजा

निर्ग्रंथेश प्रतापी परमसुखखनी श्रीन्‍ हे प्रेममूर्ति,
नात्स याब्धि व्रतीश चरणगुणनिधि सयमे भ यस्फूर्ति।
ज्ञाना सर्वागमोना निनमतगगने सूय शा धर्मधुरि,
स्वीकारो वदनाने भविजनगणना हे प्रभो! प्रेमसूरि।
जन्म वि०स १९४० (पिंडवाडा) दीक्षा १९५७ पंन्यासपद १९८१,
उपाध्यायपद १९८७ तथा आचार्यपद १९९१ (राधनपुर)

किताब की कहानी

'The service of mankind is the Service of God'

अर्थ— मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। इसी सिद्धान्त को श्रेष्ठ समझकर मानव समाज की भलाई करने के बहाने कुछ वर्षों से जितने आविष्कारकों ने अगणित बेकसूर मूक प्राणियों को मौत के घाट उतार कर भी नये नये आविष्कारों द्वारा हम मनुष्यों का हित करना चाहा है।

मगर नतीजा कुछ और ही आया है। नये नये आविष्कारों के साथ ही साथ जगत में पराधीनता, ईर्षा, लोभ, आधि और व्याधि का बाजार भी गर्म हो रहा है क्योंकि अपने (मानव के) स्वार्थ के लिये अन्य जीवों का घात करके सुखी होने या करने की भावना जहर खाकर दीर्घायु बनने की इच्छा के तुल्य है। अतएव जहां इत्यादि कष्ट हों वहां सुख की सम्भावना भी कैसे हो सकती है?

अतः सुखी बनने का इरादा व यत्न उन्हीं आर्य महर्षियों का सफल और सराहनीय है। जिन्होंने मन से केवल मनुष्यों का ही नहीं मगर विश्व का समस्त चराचर आत्माओं की भलाई का चिन्तन करके, वचन से सदाचार और संयम का उपदेश देकर, एवं काया से स्वयं सदाचारी और संयमी बनकर स्व पर हित का बीड़ा उठाया है।

शुभेषु यथाशक्ति यतनीयम् ।

अर्थ—भले काम में अपनी शक्ति अनुसार यत्न करना ही चाहिये। इसी शक्ति से प्रेरित होकर हमारे यहां (ब्यावर में) विक्रम स० २०१७ का चातुर्मास पू० आ० श्री विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराजा की परम कृपा से मुनि श्री जितेन्द्रविजयजी का हुआ। विराजे हुए मुनिराज के व्याख्यान का जो सज्जन व्यापारादि पराधीनता की वजह से लाभ नहीं उठा सकते थे उन्हें भी शास्त्रों की बातों का कुछ बोध हो इसी इरादे से प्रतिदिन श्री शांतिनाथजी मन्दिर के बाहर बोर्ड पर वाक्य लिखे जाते थे।

उन वाक्यों को प्रतिदिन पढ़ने वाले व अन्य सज्जनों की प्रेरणा से उन्हीं वाक्यों के संग्रह को पुस्तक रूप में प्रकट करके हमें अत्यंत हर्ष हुआ है। यह हुई इस किताब की कहानी।

शास्त्रों की बातों को जनता के समक्ष रखना एक बड़ी भारी जिम्मेवारी है। अतः इन संकलित वाक्यों में से कुछ को तो महान् तपस्वी प्रखरवक्ता पू० पंन्यासजी श्री भानुविजयजी गणिवर से और कुछ को आगमज्ञ कर्मशास्त्र के मास्टर पू० मुनिराज श्री जयघोष विजयजी महाराज से निरीक्षण करवाया। इस तरह दोनों विद्वानों से निरीक्षित व परिष्कृत साहित्य को ही आप (पाठक) के सामने पेश किया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह किताब किस विषय की है? "बिखरे फूल" यानि नाना वृक्ष, लता और पौधों के फूल किसी एक जाति के फूल की अभिधा धारण नहीं कर सकते। इसी तरह इसमें भी अनेक विषयों का संचय है।

किताब की कहानी

'The service of mankind is the Service of God '

अर्थ— मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। इसी सिद्धान्त को श्रेष्ठ समझकर मानव समाज की भलाई करने के बहाने कुछ वर्षों में कितनेक आविष्कर्ताओं ने अगणित बेकसूर मूक प्राणियों को मौत के घाट उतार कर भी नये नये आविष्कारों द्वारा हम मनुष्यों का हित करना चाहा है।

मगर नतीजा कुछ और ही आया है। नये नये आविष्कारों के साथ ही सारे जनता में पराधीनता, ईर्ष्या, लोभ, आधि और व्याधि का बाजार भी गर्म हो रहा है क्योंकि अपने (मानव के) स्वार्थ के लिये अन्य जीवों का घात करके सुखी होने या करने की भावना जहर खाकर दीर्घायु बनने की इच्छा के तुल्य है। अतएव जहां व्याधि बढ़ रही हो वहां सुख की सम्भावना भी कैसे हो सकती है?

अत सुखी करने का इरादा व यत्न वही आर्य महर्षियों का सफल और सराहनीय है। जिन्होंने मन से केवल मनुष्यों का ही नहीं मगर विश्व का समस्त चराचर आत्माओं की भलाई का चिंतन करके, वचन से सदाचार और सयम का उपदेश देकर, एव काया से स्वयं सदाचारी और सयमी बनकर स्व पर हित का बीड़ा उठाया है।

शुभेषु यथाशक्ति यतनीयम् ।

अर्थ—भले काम में अपनी शक्ति अनुसार यत्न करना ही चाहिये । इसी शक्ति से प्रेरित होकर हमारे यहां (ब्यावर में) विक्रम सं० २०१७ का चातुर्मास पू० आ० श्री विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराजा की परम कृपा से मुनि श्री जितेन्द्रविजयजी का हुआ । बिराजे हुए मुनिराज के व्याख्यान का जो सज्जन व्यापारादि पराधीनता की वजह से लाभ नहीं उठा सकते थे उन्हें भी शास्त्रों की बातों का कुछ बोध हो इसी इरादे से प्रतिदिन श्री शान्तिनाथजी मन्दिर के बाहर बोर्ड पर वाक्य लिखे जाते थे ।

इन वाक्यों को प्रतिदिन पढ़ने वाले व अन्य सज्जनों की प्रेरणा से उन्हीं वाक्यों के संग्रह को पुस्तक रूप में प्रकट करके हमें अत्यन्त हर्ष हुआ है । यह हुई इस किताब की कहानी ।

शास्त्रों की बातों को जनता के समक्ष रखना एक बड़ी भारी जिम्मेवारी है । अतः इन संकलित वाक्यों में से कुछ का तो महान् तपस्वी प्रवरवक्ता पू० पन्यासजी श्री भानुविजयजी गणिवर से और कुछ का आगमज्ञ कर्मशास्त्र के सागर पू० मुनिराज श्री जयघोष विजयजी महाराज से निरीक्षण करवाया । इस तरह दोनों विद्वानों से निरीक्षित व परिष्कृत साहित्य को ही आप (पाठक) के सामने पेश किया है । कहने की आवश्यकता नहीं कि यह किताब किस विषय की है ? "बिखरे फूल" यानि नाना वृक्ष, लता और पौधे के फूल किसी एक जाति के फूल की अभिधा धारण नहीं कर सकते । इसी तरह इसमें भी अनेक विषयों का संचय है ।

:: इसे भी पढें ::

इस किताब में जो वाक्य दिये गये हैं उनमें से बहुतों के नीचे (ब्राइट में) ये किस शास्त्र के आधार पर लिखे गये हैं ? उस शास्त्र का नाम लिखा है।

यद्यपि जिनेश वाक्यों की कल्पना करके सूत्र में कहे गये तत्त्वों को कहने का ढांचा बदल दिया है। वह केवल शास्त्र के अर्थ को सरलता से समझाने के लिये ही। जैसे कि वाक्य नं० १६ 'भगवान को उन्हें का फरक' इसमें—मरीज, मरहमखाना, बिमारी, दवाई, चिकित्सक आदि की यद्यपि कल्पना की गई है, वह सूत्र के अर्थ को विशद करने के वास्ते हो।

> उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे,
> मायं चऽज्जव भावेण लोभं संतोसओ जिणे।
>
> दशवै सूत्र अ ८ गा ३६

का आश्रय लेकर यहां क्रोधादि से बिमारी क्षमादि से दवाई व उपदेशक प्रभु महावीर से चिकित्सक की कल्पना है। इसी तरह अन्य अन्य वाक्यों के लिये भी समझना।

किसलिये लिखे ?

एडॉल्फ जूल, जेम्स एलन आदि पश्चिमी विद्वानों के अनुसार इसमें इसलिये लिखे हैं कि जिस पाश्चात्य प्रजा को हमारे जिनेश भारतीय अधिक समझदार मानते हैं। वह प्रजा भी उन बातों को अब स्वीकार करने लगी है जो बात हमारे आर्य शास्त्रों में सदियों से

लिखी पड़ी है अर्थात् हमारे शास्त्र ही सर्वोत्कृष्ट और विश्व का आधार हैं।

इस किताब को पूरी पढ़ने से ज्ञात होगा कि सिर्फ मानव की सेवा का छिछरा व अधूरा सिद्धांत हमारे आर्य महर्षियों ने न कभी अपनाया है और न इस तुच्छ और घातक सिद्धांत को अपनाने का उपदेश ही दिया है। वे तो येनकेन प्रकारेण प्राणीमात्र का हित करने को ही सदा तत्पर रहे हैं।

इस छोटी सी किताब में करीब तीन सौ से अधिक विषय हैं। अतः पुस्तक का कद बढ़ाना उचित न समझ कर विषयों की अनुक्रमणिका नहीं दी है।

लेखक, निरीक्षक या प्रेस के दोष से जितनी भी त्रुटियां पाठकों को इसमें जान पड़े कृपया सुधार कर पढ़ें व हमें विदित करने का कष्ट उठावें ताकि यदि दुबारा इसे छपवाने का अवसर प्राप्त हुआ तो उन त्रुटियों को सुधारने का यथासम्भव खयाल रखेंगे।

विशेष बात

इस पुस्तक को पढ़ने से आपको पता लगेगा कि आर्य महर्षियों का उद्देश अपनी वाक्पटुता बताने का नहीं, मगर सरल से सरल शब्दों में स्त्री-बच्चे व कम पढ़े लोगों को भी कुछ बोध कराने का होता है।

ब्यावर
ता० ११-६-१९६१
(वीर जन्म वाचन दिन)

भवदीय
शांतिनाथजी जैन पेढ़ी के सचालक
शंकरलाल मुणोत

:: इसे भी पढे ::

इस किताब म जो वाक्य दिये गये हैं उनमें से बहुता के नीचे (साइड म) वे किस शास्त्र के आधार पर लिखे गये है ? उस शास्त्र का नाम लिखा है।

यद्यपि कितनेक वाक्यो की कल्पना करके सूत्र म कहे गये तत्त्वों को कहने का ढाचा बदल दिया है। वह केवल शास्त्र के अर्थ को सरलता स समझाने के लिये ही। जैसे कि वाक्य न० १६ "मरीज को लेने का पत्रक" इसमें—मरीज, दवाखाना, बिमारी, दवाइ, चिकित्सक आदि को यद्यपि कल्पना की गई है, वह सूत्र के अर्थ को विशद करने के वास्ते हा।

> उवसमेण हणे कोह माण मद्दवया जिणे,
> माय अज्जव भावण लोभ सतोसओ जिणे।
> दशवै सूत्र अ ८ गा ३९

का आश्रय लेकर वहा क्रोधादि में बिमारी समादि म दवाई व उपदेशक प्रभु महावीर म चिकित्सक की कल्पना है। इसी तरह अन्य अन्य वाक्यों के लिये भी समझना।

किसलिये लिखे ?

एडॉल्फ जूस्ट, जेम्स एलन आदि पश्चिमी विद्वानो के उद्‌गार इसमें इसलिये लिखे हैं कि जिस पाश्चात्य प्रजा को हमारे कितनेक भारतीय अधिक समझदार मानते है। वह प्रजा भी उन बातो को अब स्वीकार करने लगी है जो बातें हमारे आर्य शास्त्रो में सदियों से

लिखी पड़ी है अर्थात् हमारे शास्त्र ही सर्वोत्कृष्ट और विश्व का आधार हैं।

इस किताब को पूरी पढ़ने से ज्ञात होगा कि सिर्फ मानव की सेवा का छिछरा व अधूरा सिद्धांत हमारे आर्य महर्षियों ने न कभी अपनाया है और न इस तुच्छ और घातक सिद्धांत को अपनाने का उपदेश ही दिया है। वे तो येनकेन प्रकारेण प्राणीमात्र का हित करने को ही सदा तत्पर रहे हैं।

इस छोटी सी किताब में करीब तीन सौ से अधिक विषय हैं। अत पुस्तक का कद बढ़ाना उचित न समझ कर विषयों की अनुक्रमणिका नहीं दी है।

लेखक, निरीक्षक या प्रेस के दोष से जितनी भी त्रुटियां पाठकों को इसमें जान पड़ें कृपया सुधार कर पढ़ें व हम विदित करने का कष्ट उठावें ताकि यदि दुबारा इसे छपवाने का अवसर प्राप्त हुआ तो उन त्रुटियों को सुधारने का यथासम्भव ख्याल रखेंगे।

विशेष बात

इस पुस्तक को पढ़ने से आपको पता लगेगा कि आर्य महर्षियों का उद्देश अपनी वाक्पटुता बताने का नहीं, मगर सरल से सरल शब्दों में स्त्री बच्चे व कम पढ़े लोगों को भी शुद्ध बोध कराने का होता है।

ब्यावर
ता० ११-६-१६६१
(वीर जन्म वाचन दिन)

भवदीय
शांतिनाथजी जैन पेढ़ी के सचालक
शंकरलाल मुणोत

शुद्धि-पत्रक

卐

किताब को पहिले सुधारें बाद म पढ़ें ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
क	७	मनुष्य	मनुष्यों
ख	४	शक्ति	वृत्ति
ग	१६	समझाया	समझना
घ	६	तीन सौ	ढाई सो
४	६	जन वचन	जिनवचन
६	७	मानदारी	ईमानदारी
१८	६	लालसऐं	लालसाए
१८	१२	"	"
३०	४	हासिल	हासिल होती है
४४	७	प्रहरकरीब	प्रहर-करीब
७४	५	नसतार	नसवार
८२	६	जीवो मुझे	जीव मुझे
८२	१०	बना हुआ कलुषित	कलुषित बने हुऐ
८२	१०	तपा हुआ	तपे हुए

नोट — इस किताब के पृष्ठ ७४, ८२, ५४ व ७० पर भजन छपे हैं। उन्हें रटकर कंठस्थ करने की कोशिश अवश्य कीजिये।

—— ——

प्रथम से बने हुए ग्राहकों के शुभ नाम

卐

प्रति १०० सेठ शकरलालजी मुणोत, ब्यावर
,, १०० ,, कनकराजजी जवेरीलालजी, ब्यावर
,, १०० ,, सुखराजजी नोरतमलजी कांकरिया, ब्यावर
,, १०० ,, मागीलालजी डागी (केकड़ी वाला), ब्यावर
,, ५० ,, डु गरमलजी भुरालालजी गादिया, ब्यावर
,, २५ ,, सुगनचन्दजी मुथा (जैतारण वाला), ब्यावर
,, २५ ,, पुखराजजी भंडारी, ब्यावर
,, २५० ,, मोहनलालजी फोजमलजी, वाली
,, १०० ,, लालचन्दजी जुहारमलजी मुथा, वाली
,, १०० ,, श्रा श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी व शिष्य
मुनि श्री प्रीतिविजयजी के उपदेश से
,, ५० ,, माकुलचन्दजी देवीचन्दजी, वाली
,, ५० ,, धन्नीलालजी बोरा, पीपाड सीटी
,, १०० ,, शिवराजजी रामपालजी महेता (पीसागनवाला

प्रथम सस्करण – १५००

❀ बिखरे फूल ❀

इजेक्शन

जीवों की रक्षा करने वालों को कोई भी बिमारी नहीं होती।

—योगशास्त्र

टॉनिक

पट्ठेदार शरीर दूसरे जीवों का रक्षण करने से बनता है।

—योगशास्त्र

जानिये और करीये भी

एक सामायिक करने से ९२५९२५९२५ पल्योपम से कुछ अधिक वर्षों का यानि असंख्य वर्षों तक देवलोक के सुख भोगने का पुन्य बंधता है।

—वीर विजयजी की पूजा में

तुलना

गुरू (धर्महीनों से) तुम्हारा जीवन पशु जैसा है।

धर्महीन (सब एक साथ) कैसे ? पशुओं के तो सींग होते हैं।

गुरु (प्रेम से) क्या गधा के भी होते हैं ?

—विद्वद् गोष्टि "मनुष्य रूपेण मृगा चरन्ति"

बरकत की आशा

दरिद्र—मुझे व्यापार आदि में बरकत क्यों नहीं ?

ज्ञानी गुरु—क्या तुम्हारे में देवद्रव्य के रुपये देन हैं ?

दरिद्र—जी हां। हैं तो सही।

ज्ञानी गुरु—जब तक चुकाओगे नहीं, तब तक धनी व सुखी होने की आशा नहीं है।

—द्रव्य सप्ततिका

देवों को दास बनाइये

यहां देवद्रव्य की रक्षा करने वाले जीवों की भविष्य में करोड़ों देव भी दास बनकर सेवा करते हैं।

—द्रव्य सप्ततिका

उपकारी

जैसे भोजन से शरीर का बल मिलता है वैसे ही सुना हुआ एवं पढ़ा हुआ धर्म आत्मा को उपकारी होता है।

—सुभाषित

कमाई का तरीका

लाभांतराय कर्मों के दूर हटाने पर ही धन आदि की

प्राप्ति होती है। वे अतरायकर्म न्याय से हटते हैं।

अत: न्याय के पथ पर अटल रहिये।

—धर्मबिन्दु

उपदेश

धन आये या जाए लेकिन सच्चाई को न छोडें। सच्चाई छोड़ने से वसुराजा असंख्य वर्षों तक दुःख ही दुःख मिले ऐसी सातवीं नरक में गया है।

—धर्मरत्न प्रकरण, रामायण

क्या आप भी झूठ को त्याग कर, नरक के दुखों से बचेंगे ?

इन्द्र के पद से ऊंचा पद

कोई भी इंद्र एक मामूली देव बनने तक का पुण्य भी नहिं हासिल कर सकता और मनुष्य तो देव क्या इंद्र बनने का पुण्य भी कमा सकता है और सिद्ध भगवान भी बन सकता है।

—धर्मग्रंथ ३ रा

खतरा

विषैले सापों से भी धर्महीन मनुष्य को अधिक खतरा है। क्योंकि सांप और सिंह मरकर छट्ठवीं नरक में भी नहिं जाते। लेकिन धर्महीन मनुष्य तो सातवीं नरक में भी चला जाता है।

अत धर्म की शरन में जाइए ।

—श्री पन्नवणा सूत्र

पाप का उदय

बुखार वाले को भोजन नहीं भावे और पाप के उदय से जनवचन न सुहावे ।

—सुभाषित संग्रह

नरक मे जाने के चार रास्ते

(१) रात्री भोजन ।
(२) परस्त्री गमन ।
(३) जमीन कन्द (आलू मूली, शकरकद आदि) का भक्षण ।
(४) गीला (सधान) अचार ।

—योगशास्त्र, ठाणाग

सात बुरी आदतें जिन्हे अवश्य छोडनी चाहिये

(१) शिकार (२) मांस भक्षण (३) शराब (४) वेश्यागमन (५) परस्त्रीगमन (६) चोरी (७) जुआ ।

—अनर्थदण्डाधिकार

पुन्य हासिल कीजिये

माता पिता आदि गुरुजनो की सेवा करने से शातावेदनीय पुन्य कर्म बधता है ।

क्या आप भी पुन्य हासिल करेंगे ?

—धर्मग्रथ १ ला

पत्रक मरीज को देने का

आत्मा की बिमारियां का सफाखाना

शाखा–वाचक का नगर

रोगी का नाम—हरेक नागरिक

उम्र—एक दिन से लगाकर सौ साल तक का बुड्ढा।

बिमारी	दवाई
(१) क्रोध – गुस्सा	क्षमा – खामोशी (१)
(२) मान – घमड	नम्रता – लघुता (२)
(३) माया – जालसाजी	सरलता – साफ दिल (३)
(४) लोभ – धन आदि की तृष्णा	संतोष और दान (४)

हस्ताक्षर
प्रधान चिकित्सक
प्रभु महावीर
श्री दशवैकालिक सूत्रम्

बिमारियों का घेरा

जीवों को मारने व मरवाने वाला को बिमारियां आ घेरती हैं।

—तत्त्वार्थ महाशास्त्र

लम्बी उम्र पाओ

जीवों को बचाने से लम्बी उम्र मिलती है।

—योगशास्त्रम्

इच्छित प्राप्ति का उपाय

प्रभुजी का पूजन करने से अंतराय कर्म हटते हैं। जिस से सभी इच्छित (धन आदि) की अनायास प्राप्ति होती है।

—कर्मग्रंथ १ ला।

फूलों से पूजन का फल

फूलों से प्रभु पूजन करने के प्रभाव से राजा कुमारपाल अट्ठारह देशों के मालिक बने।

—श्री कुमारपाल चरित्र

दुःख रोकने का उपाय

गृहस्थ—नरक गति में जाना कैसे रुके?
गुरू—दान देने से।
गृहस्थ—और तिर्यंच गति कैसे रुके?
गुरू—व्रत पचक्खाण करने से।

—आचारोपदेश

याद रखिये व करने लगिये

श्रावकों के प्रतिदिन के कर्त्तव्य —
(१) जिनपूजा (२) गुरू महाराज की उपासना (३) सुपात्र

दान (४) जीवों पर अनुकम्पा (५) गुणों का अनुराग (६) शास्त्र का श्रवण।

—अष्टाह्निका व्याख्यान

अनुकरण करें

कोढ़ के रोग से जब काया सड रही थी तब तथा राज्य और रमणियों का सुख भोग रहे थे तब भी राजा श्रीपाल ने नवपदजी की ओली की थी।

अतः दुःखों को जलानेवाली व सुखों को बढानेवाली आंबिल की ओली कीजिये।

—सिरि सिरिवाल कहा

ओली के दिनों में हरेक करें

(१) प्रभु पूजा
(२) ब्रह्मचर्य पालन
(३) प्रतिक्रमण
(४) आंबिल (जितने हो सकें)
(५) "नमो अरिहंताणं" आदि पद की २० माला
(६) प्रभुजी की आंगी
(७) गुस्सा, झुठ आदि का त्याग
(८) आरंभ का त्याग

—श्रीपाल चारित्र

आत्मा के लिये ताकतवर नुस्खा

(१) हरेक जीव को अपना मित्र समझो।
(२) दूसरा (पड़ोसी आदि) का धन आदि सुख देखकर जलो नहीं, लेकिन खुश हो।

(३) निर्धनों को धन देने की और धर्म हीनों को धर्मी बनाने की भावना रक्खो।
(४) जो देवगुरु की भी निंदा करते हो ऐसे जीवों की भी तुम निंदा मत करो, उपेक्षा करो।

—योग शास्त्र अ ४था

हित का अर्थी

बुद्धिमान जैन—हम दिवाली में क्या करना चाहिये?

गुरू—दिवाली में हरेक जैनी को दो दिन का उपवास और सोलह प्रहर का पौषध करना चाहिये, एव दिवाली के रोज शाम के प्रतिक्रमण के बाद "श्रीमहावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम" इस पद की २० माला फेरना। आधी रात के बाद करीब ४ बजे महावीर स्वामीजी के देव वदन करना फिर "श्रीमहावीर स्वामी पारगतायनम" इस पद की बीस माला फेरना। फिर गौतम स्वामीजी के देववन्दन करना फिर प्रात काल म श्री गौतमस्वामी सर्वज्ञायनम" इस पद की २० माला फेरना।

—दीपालिका कल्प

कर्म का फटाका

बाबू -(मा से) मा! मैं दिवाली में फटाके फोड़ूगा।
अम्मा -लाला! हम जैनी हैं, जैनी तो कर्म का फटाका तपस्या की तुली से फोडते हैं।

बाजारू फटाके फोड़ने में तो हिंसा का बड़ा भारी पाप लगता है।

—दीपालिका कल्प।

दिवाली तक का वहीखाता

मुनाफा	घाटा
मानदारी और न्याय से।	झूठ और जालसाजी की तो।
तपश्चर्या।	जितना भी खाया।
दान।	ममता के वश दान न दिया।
सदाचार पालन।	आंख आदि से दुराचार किया।

अपना वहीखाता तपासें।

—योगशास्त्र।

बायों का वही खाता

मुनाफा	घाटा
(१) सास, ससुर की सेवा की।	सास आदि का अपमान किया।
(२) देवरानी, जेठानी को अपने से अधिक सुखी देखना चाहा।	देवरानी जेठानी के पुत्र आदि की और सुख की ईर्ष्या की।
(३) टाबरों को विनय आदि धर्म सिखाया।	बच्चों के आत्मा की भलाई का विचार न किया।
(४) गुणीजनों की प्रशंसा की।	किसी की निंदा की।

(५) प्रभुजी का दर्शन, पूजन किया।	किसी से कलह किया। नाटक, सिनेमा देखे।

—योगशास्त्र आदि।

दिमाग का व्यायाम

क्या आप जानते हैं ?

(१) पालक के एक पत्ते में कई करोड़ जीव हैं।

(२) अड़तालीस मिनट तक यदि जूठे बर्त्तन साफ न किये जायें तो उन में करोड़ों (असत्य) जीव उत्पन्न होते और मरते हैं।

अत पालक न खाइये व जूठे बर्त्तन रख न छोडे।

—श्री पद्मयशाजी सूर

स्टुडेन्ट्स डायरी

प्रॉफिट	लॉस
(१) माता-पिता को सुबह, दोपहर और शाम को प्रणाम किया।	माता पिता का आदर न कि
(२) हरेक कार्य में उनकी अनुमति ली।	माता पिता की आज्ञा के मनमाना कार्य किया।
(३) पिताजी की हैसियत देखकर खर्च करवाया।	उनी साथियों की पोशाक के लिये पिताजी को तग कि

(४) प्रभुजी का दर्शन पूजन किया।	सिनेमा आदि देखकर मन को मैला किया।

—योगशास्त्र

दयालु बनो

सब जीवों के प्रति दयालु बनने से शातावेदनीय पुन्य बंधता है।

—कर्मग्रंथ १ ला।

ज्ञान की लहर

श्रावक—एक हरी मिरच में कितने जीव हैं?

गुरु—एक हरी मिरच में जितने बीज हैं, उससे एक अधिक जीव उसमें हैं। जैसे एक मिरच में बीज तीस तो उस में जीव इकतीस।

—श्री पन्नवणाजी सूत्र।

श्रावक—क्या एक आलू में भी इतने ही जीव हैं?

गुरु—भाई! आलू के तो एक छोटे से छोटे टुकड़े में भी कई करोड़ (अनंत) जीव हैं।

अतः आलू कतई न खाएं, न खरीदें, न पकाए ही। "प्राण जाए तो जाए मेरो दया धर्म नहीं जाए।"

—जीव विचार प्रकरण तथा
श्री पन्नवणासूत्र।

एक चिंतन

वर्तमान में सुख या दुख हमारे भूतकाल के अच्छे या

बुरे कामों का नतीजा है। अत: वर्त्तमान के संयोगों से संतुष्ट रहकर भविष्य को सुन्दर बनाने के लिये आज से शुभ काम करने लगें।

—ज्ञानसार।

साबुन

कपड़ों का मैल साबुन से छूटता है लेकिन आत्मा का मैल तो प्रतिक्रमण करने से मिटेगा।

क्या आप भी सुबह शाम प्रतिक्रमण करते-करती हैं? यदि नहीं तो आज से ही करने लगें।

—हितोपदेश।

धीरज का छाता

पानी तो आषाढ़ मास आदि नियत दिनों में ही बरसता है, लेकिन दु:खों की वर्षा तो अनियत यानि किसी भी काल में होने लगती है। अत: धीरज का छाता सदैव पास में रक्खें।

—सुवाक्य मजूषा।

नवकार प्रभाव

आपको जिन वस्तुओं की आवश्यकता है, उन वस्तुओं के पीछे आप न दौड़ें। नवकार मन्त्र उन वस्तुओं को आप के पास लाने दें।

आप तो नवकार मन्त्र का शुद्ध जाप ही किया करें।

—नवकार महात्म्य।

कठोर कानून

कर्म, अपराधी को अवश्य दंड करता है। कर्म के राज्य में किसी का भी अपराध कभी भी माफ नहीं हुआ।

—ज्ञानसार।

अदृश्य आग

चिंता एक ऐसी आग है जिसकी ज्वालाए दीखती नहीं हैं फिर भी मनुष्य को सतत जलाया करती हैं।

आप यदि चिंता की आग में पड़े हों तो फौरन बाहर निकलिये।

—सुभाषित संग्रह।

सज्जन और दुर्जन

सज्जन पुरुष जैसा सोचते हैं वैसा ही कहते और करते हैं, लेकिन दुर्जनों के मन में कुछ और, वचन में उससे भिन्न व काया से कुछ और ही करते हैं।

—सुवाक्य मंजूषा।

दो मित्र

मोहन—भाई कनक! सामायिक, पौषध, प्रभुजी का पूजन आदि करते हो न?

कनक—मैं तो नहीं करता लेकिन हमारे घर से मेरे माताजी तो करता हैं।

मोहन–क्या कुटुम्ब में किसी एक का किया हुआ धर्म भी कभी दूसरे के काम आ सकता है ? आप नहीं जानते हैं, कि श्री शांतिनाथ भगवान धर्म करके मोक्ष में पधारे हैं और उनकी ही पत्नि (पट्टराणी) धर्म न करने से छठवीं नरक में गई है।

—श्री शांतिनाथजी चरित्र।

भूख

अन्न का भूखा तो एक रूखी रोटी से भी तृप्त हो सकता है, लेकिन धन का भूखा तो दुनिया भर की सम्पत्ति पाने पर भी तृप्त नहीं होगा।

—योगशास्त्र।

चुका दो

लोभी–दिवाली में लक्ष्मी पूजन तो मैंने ठीक मुहूर्त पर किया था, फिर भी मुझे व्यापार में बरकत क्यों नहीं ?

तत्त्वज्ञानी–यदि विष भूल से खाया जाय तो भी उससे अवश्य मृत्यु होती है वैसे ही यदि देवद्रव्य का एक पैसा तक जो भूल से भी खायेगा उसे यहां तो क्या अन्य भवों में भी धन की प्राप्ति नहीं होगी।

तुम तो देव द्रव्य को जान बूझकर खा रहे हो। अतः बरकत कैसे हो ? बरबादी ही होगी।

सुखी होना है तो देन द्रव्य-थोली आदि के रुपये फौरन चुका दो।

—आत्म प्रबोध।

प्रेरणा

कल्याण मित्र–(दुष्ट कुमनारर) तू ने कृपणता राक्षसी को अपनी आत्मा में बसाया है। अतः अब परमाधामी शैतान क हाथों की मार खाने को तैयार रहना।

कृपणता से ऐसा अशातावेदनीय कर्म बंधता है जिसे भोगने को नरक म जाना पड़ता है।

—कर्मग्रथ १ ला।

सच्चा निदान

मरीज–वैद्यजी! मेरी जीभ पर बार बार छाले पड़ जाते हैं। इस का क्या कारण है?

वैद्य – क्या आप तेल मिरच आदि अधिक खाते हैं?

मरीज–ना जी! करीब छ महीनों से तो मैंने तेल मिरच वगैरह गरम चीजें खाना सर्वथा ही छोड़ दिया है।

वैद्य—तब तो यह रोग आपको किसी बुरे कर्मो के फलस्वरूप ही हुआ मालूम होता है।

झूठ बोलने से मुख के असाध्य रोग होते हैं। अतः अब स तो सत्य ही बोलें।

—योगशास्त्र।

जैन धर्म की प्राचीनता

बौद्ध धर्म संस्थापक गौतमबुद्ध के पहले जैन धर्म के अन्य तेईस तीर्थ कर हो गये हैं।

—इंपिरियल गेमेटिंग ऑफ इंडिया।

पश्चिमी विद्वान का मत

जैन धर्म यह बौद्ध धर्म की अपेक्षा भी प्राचीन है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

—टि डबल्यू राइस डेहिड।

हर्टल के उद्गार

बौद्ध धर्म के साहित्य की अपेक्षा जैन धर्म का साहित्य उच्च दर्जे का है। जैन धर्म तथा जैन साहित्य के विषय में ज्यों ज्यों मेरी जानकारी बढ़ती जाती है त्यों त्यों मेरे हृदय में उसके (जैन धर्म के) प्रति आदर दुगुने वेग से बढ़ रहा है।

—डॉ जान, हर्टल जर्मनी।

भलाई की बात

आपके दिमाग में से सड़े हुये यानि मौज शौक़ के व धन माल के विचार निकाल फेंकिये वरना वे गंदे विचार आपके दिमाग को ही सड़ा देंगे।

—सुवाक्य मंजूषा।

स्वस्थ रहने का उपाय

बिमार—दवाई तो महीनों से ले रहा हूं न मालूम फिर भी स्वास्थ्य क्यों नहीं प्राप्त होता ?

ज्ञानी मित्र—भाई ! अपने किये हुये कर्म बिना भोगे कैसे छूटे ? हिंसा करने से ऐसे कर्म बधते हैं, कि करोड़ों दवाईया करो फिर भी बिमारी नहीं जाती। अत स्वास्थ्य के प्रेमीओं को चाहिये कि कतई जीव हिंसा न करें।

—योगशास्त्र।

दूसरों की आंखों से

आपकी गल्तियों को आपकी आखें नहीं देख पाएगी अत दूसरों की आखों से अपनी गल्तिया देखें (जानें)।

—सुभाषित संग्रह

इतवार

सुरेश—इतवार को सिनेमा चलोगे न ?

प्रकाश—भाई ! घर घर में सिनेमा ही तो है, फिर वहा जाकर अधिक क्या देखेंगे ? देखिये ! एक ही घर में एक रोगी है तो दूसरा स्वस्थ। एक लड़का बना दूसरी लड़की। आत्माए एक सी होते हुए भी कितना अतर ? यह सिनेमा नहीं है क्या ?

ज्ञानसार अष्टक २१ वा।

जैन धर्म की प्राचीनता

बौद्ध धर्म संस्थापक गौतमबुद्ध के पहले जैन धर्म के अन्य तेईस तीर्थ कर हो गये हैं।

—इंपिरियल गेजेटिंग ऑफ इंडिया।

पश्चिमी विद्वान का मत

जैन धर्म यह बौद्ध धर्म की अपेक्षा भी प्राचीन है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

—टि डबल्यू राइस डेहिड।

हर्टल के उद्गार

बौद्ध धर्म के साहित्य की अपक्षा जैन धर्म का साहित्य उच्च दर्जे का है। जैन धर्म तथा जैन साहित्य के विषय में ज्यों ज्यों मेरी जानकारी बढ़ती जाती है त्यों त्यों मेरे हृदय में उसके (जैन धर्म के) प्रति आदर दुगुने वेग से बढ़ रहा है।

—डॉ जान्स, हर्टल जर्मनी।

भलाई की बात

आपके दिमाग में से सडे हुये यानि मौज शौक के व धन माल के विचार निकाल फेंकिये वरना व गदे विचार आपके दिमाग को ही सड़ा देंगे।

—सुवाक्य मजूषा।

स्वस्थ रहने का उपाय

बिमार—दवाई तो महीनों से ले रहा हूं न मालूम फिर भी स्वास्थ्य क्यों नहीं प्राप्त होता ?

ज्ञानी मित्र—भाई ! अपने किये हुये कर्म बिना भोगे कैसे छूटे ? हिंसा करने से ऐसे कर्म बंधते हैं, कि करोडों दवाईयां करो फिर भी बिमारी नहीं जाती। अत स्वास्थ्य के प्रेमीओं का चाहिये कि कतई जीव हिंसा न करें।

—योगशास्त्र।

दूसरों की आंखों से

आपकी गल्तियों को आपकी आखें नहीं देख पाएगी अत दूसरों की आखों से अपनी गल्तिया देखें (जानें)।

—सुभाषित संग्रह

इतवार

सुरेश—इतवार को सिनेमा चलोगे न ?

प्रकाश—भाई ! घर घर में सिनेमा ही तो है, फिर वहां जाकर अधिक क्या देखेंगे ? देखिये ! एक ही घर में एक रोगी है तो दूसरा स्वस्थ। एक लड़का बना दूसरी लड़की। आत्माए एक सी होते हुए भी कितना अंतर ? यह सिनेमा नहीं है क्या ?

ज्ञानसार अष्टक २१ वा।

मिनेमा की मौज

सुरेश—अरे भाई! फिर भी मिनेमा की मौज कुछ और ही है।

प्रकाश—सिनेमा में सदाचार से भ्रष्ट स्त्री पुरुषों के अश्लील चित्र देखने से व गाने सुनने से मन मलीन होता है। जिससे यहा और परभव में भी घोर दुःख पाते हैं।

—दशवैकालिक अ० ६ था

लालसाएँ

जैसे खुजलान से खुजली बढ़ती है। वैसे ही बढ़िया खाने पीने, ओढ़ने पहिनने व देखने से, खाने-पहिनने आदि की लालसाएँ बढती जाती हैं।

—इन्द्रियपराजय शतक

धूम्रपान

बचपन और युवानी में बीड़ी सिगरेट या चिलम पीने वाले अपने को बुढापे में रोगी बनाने क बीज बोते हैं।

आज और आगे भी तन्दुरुस्ती चाहते हैं? तो धूम्रपान कतई न करें।

—जलचिकित्सा

कसौटी

दरिद्रता कसौटी है और दीनता दुर्गुण है।

अत आप यदि दरिद्र हैं फिर भी दीन न बनें।

—सुभाषित समद।

आवश्यक बातें

जलाओ मोह की वासनाओं को।
खिलाओ भूखों को।
करो परोपकार।
दबाओ गुस्से को।
दान सुपात्र में दो।

—हितोपदेश।

चाहना

"वारिस आए" ऐसा हर कोई चाहता है। मगर "समुद्र आए" ऐसा कोई नहीं चाहता। इसी तरह थोड़े में से थोड़ा भी देने वाले (दाता) को सभी चाहते हैं लेकिन कृपण धनी को कोई भी नहीं चाहता।

—दानधर्म।

दुर्गति

संग्राम में विजय शूरवीरों की होती है और परभव में सद्गति धर्मीजनों की होती है।

जो धनी है मगर धर्मी नहीं है उनकी दुर्गति होगी। जैसे कि मम्मण शेठ की हुई।

—कर्म ग्रन्थ १

भविष्य वानी

अपने पास धन आदि होते हुये भी जो दान देना नहीं चाहते उन्हें ऐसे दिन देखने पड़ेंगे कि द्वार-द्वार पर भटकने पर भी टुकड़ा रोटी भी नहीं पा सकेंगे।

अत पात्र की योग्यता देखकर दान देते रहिये।

—धर्मग्र थ १ ला

कोढ का कारण

बाबू—मा ! इस आदमी को क्या हो रहा है ?

माता— लाला ! इसके बदन से रसी टपक रही है, इसे कोढ रोग हुआ है।

बाबू—इसे कोढ क्यों हुआ ?

माता— बाबू ! जो लोग दूसरे जीवों की हिंसा करते हैं उन्हे कोढ, टी बी, कैन्सर आदि बिमारिया होती हैं।

—योगशास्त्र अ २ रा।

नतीजा

परस्त्री के यार और परपुरुष को चाहने वाली स्त्रियां नरक में जाती हैं। एव अनेक भवों तक नपु सकों तथा पशुओं का अवतार पाती हैं। अत सावधान बनें।

—योगशास्त्र।

चोरी

चोरी करने वाले दरिद्र एव चाकर बनते हैं, तथा जीते

जी उनके हाथ पैर आदि अग कटते हैं और मरने के बाद नरक में जाते है ।

—योगशास्त्र।

नीच

अनेक नीच पुरुषों न सेवन की हुई वेश्याओं को चाहने वाला पुरुष जूठा भोजन खाने वाले कुत्तों म भी नीच है ।

—योगशास्त्र।

चाहते है ?

दीर्घायु, शरीर में बल, तेज और सौंदर्य चाहते है ? तो मन वचन काया से ब्रह्मचर्य का पालन करें ।

—योगशास्त्र।

सन्तोष

जिन्हें सन्तोष हैं उनकी देवता भी सेवा करते हैं। एव सम्पत्ति तो उन्हें अनायास मिल ही जाती है। क्योंकि सन्तोष से अन्तराय कर्म हटते हैं।

—योगशास्त्र।

शोभा

नमक से भोजन रुचिकर बनता है वैसे ही विनय से पढ़ाई (ज्ञान) शोभा पाती है।

यदि आप अच्छे पढे लिखे है ? तो विनीत बनें ।

—दशवैकालिक सूत्र।

आदर

तेज चाल वाला घोड़ा ही कीमती होता है, चाहे उसका रंग कैसा भी हो। इसी तरह उदार दिल वाला गृहस्थ ही हर जगह आदर पाता है चाहे वह अधिक धनी न भी हो।

—योगशास्त्र।

समझें

देव, गुरु आदि के पास खाली हाथों नहीं जाना चाहिए आप प्रभूजी के दर्शन पूजन को जाते वक्त अक्षत (चावल) फल आदि लेकर जाते हैं न ?

—कल्पसूत्र टीका।

जैसे को तैसा

पदम – रावण ने अष्टापदजी पर जिनप्रतिमा की भक्ति करके तीर्थ कर बनने का पुन्य हासिल किया।

शशी– यह बात किस आगम में लिखी है ?

पदम—आपके पिताजी का नाम किस आगम में लिखा है ? भाई ! क्या आप सब आगम पढ़ या सुन चुके हैं ? अत शास्त्र की बातों में सन्देह न किया करें।

—तत्वार्थ महाशास्त्र।

विधि

मंदिरजी में प्रभुजी का दर्शन-पूजन करते वक्त पुरुषों

अपने बायें हाथ की ओर खड़े रहना या बैठना चाहिए तथा स्त्रियों को अपने दाहिने हाथ की ओर।

—प्रवचनसारोद्धार

क्या चाहते हैं ?

दूसरों की बड़ाई करने से पुन्य होता है और अपनी तारीफ करने से पाप।

आप यदि पुन्य चाहते हैं तो गुणीजनों की तारीफ किया करें।

—ज्ञानसार।

बलवान

हजारों हाथीओं को वश में करने वाले महावत से भी अधिक बलवान अपने मन को वश में करने वाले हैं।

—इन्द्रियपराजय शतक।

फर्स्ट नम्बर पास

वही कॉलेजियन फर्स्ट नम्बर पास गिना जायगा। जिसने अपनी आख से किसी स्त्री या लड़की को बुरी नजर से नहीं देखना चाहा।

चाहे इम्तिहान में उसका आखिरि नम्बर ही क्यों न रहा हो।

—योगशास्त्र।

स्तवन-भजन

(राग ननरदु व महरे की)

प्रभुजी ! मुक्ति पाने को, तेरे दरबार आऊ मैं ।
चाहुं जब आना मदिर में, तमी पुन्य कमाऊ मैं ॥प्रभुजी ॥१॥

चाह आने की जब करना, लाभ उपवास का होता ।
उठा प्रभु दरश करने को, दुगुना पुन्य पाऊ मैं, ॥प्रभुजी ॥२॥
लगा जाने प्रभु मन्दिर, अट्टम का पुन्य हो आया ।
कदम जैसे बढाता हू, चार का पुन्य पाऊ मैं ॥ प्रभुजी ॥३॥
पाच उपवास का पुन्य, हो जाता राह चलते ही ।
अर्ध पथ आते मदिर के, पदर का लाभ पाऊं मैं ॥प्रभुजी॥४॥
दरश जब होता मदिर का, मास का पुन्य होता है ।
आया जब पास मदिर के, छ मासी लाभ पाऊ मैं ॥प्रभुजी॥५
आया जब द्वार जिन घरके, वहे जिन पुन्य जो हुआ ।
वर्ष उपवास का जानुं, न शंका नाथ ! आनुं मैं ॥प्रभुजी॥६॥
प्रदक्षिणा तीन जब दीनी, पुन्य की पोठ भर लीनी ।
क्षपण[२] शत वर्ष का पुन्य हुआ है नाथ ! मानु मैं ॥प्रभुजी॥७॥
नयन से नाथ को देखा, मिटे मरे पाप अरु दु ख ।
कहे जिन पुन्य सो हुआ महस मैम[३], वॉम[४] मे होता ॥प्रभुजी॥८॥
फल अनत भनि पाऐ, नाथ को भाव से वांदे ।

१ इच्छा, २. उपवास, ३ वर्ष, ४ उपवास।

शतगुन पुन्य पाऊ गा, प्रभु को जब मैं पूजूंगा, ॥प्रभुजी॥६॥
पुष्प की माल पहेराऊ, बहुत फल नाथ ! मैं पाऊ ।
गीत अरु गान के फल का, बृहस्पति पार नहीं पाया ॥प्र०१०॥
धूप अरु दीप से पूजू, अक्षत नैवेद्य फल लाऊ ।
करू अष्ट द्रव्य से पूजन, भवोदधि पार होऊ मैं ॥प्रभुजी॥१०॥

बनि जगदीश ही जाए, नाटक अरु भावना भाए ।
पूजन फल आपने देखा, सुधर्मा स्वामी ने सुथा ॥प्रभु॥१२॥
करे स्वीकार वह ज्ञानी, आपकी येही है वानी ।
प्रेम से ज्ञान का भानु जिनेन्द्र नाथ मैं चाहुँ ॥प्रभुजी ॥१३॥

जानलें ताकि जाते रहियेगा

(१) प्रभु दर्शन लिए मन्दिर जाने की इच्छा करने पर एक उपवास का लाभ होता है ।

(२) मन्दिर जाने को उठे, कि दो उपवास का पुन्य ।

(३) मन्दिर जाने लगे कि तेल (तीन उपवास) का लाभ ।

(४) मन्दिर जाने के लिये कदम उठाते ही चार उपवास का पुन्य होता है ।

प्रभुजी के दर्शन-पूजन से कितना लाभ है ? उसे आगे पढ़ें, और मन्दिरजी प्रतिदिन जाते रहिये ।

—पूर्वाचार्य ।

---

१ तीर्थङ्कर

प्रभुजी के दर्शन पूजन से लाभ

(५) मन्दिरजी जाने के लिये राह में चलने लगे कि पाच उपवास का पुन्य होता है।

(६) मन्दिर के अर्ध पथ आये तब पदरह उपवास का पुन्य।

(७) मन्दिर का दर्शन हुआ कि मासक्षमण का लाभ।

(८) और जब मन्दिरजी के निकट आये तब छ मासी उपवास का पुन्य होता है।

अत मन्दिरजी जाने में कभी नागा न होने दें।

—उपदेश प्रासाद।

श्रद्धालु श्रावक

श्रावक—आपने कल फरमाया था कि प्रभुजी के दर्शन करने की इच्छा से मन्दिर के निकट आवे तो भक्त को छ मासी उपवास का फल मिलता है। कृपया आगे फरमाईये।

गुरु—सुनिये! जिनेश्वर देव की प्रतिमा के दर्शन का अभिलाषी जब मन्दिर के दरवाजे तक पहुचता है तो उसे एक वर्ष के उपवास का लाभ होता है। एव तीन प्रदक्षिणा करने से सौ वर्ष क उपवास का फल मिलता है।

इसीलिये जो समझदार हैं वे मन्दिर जान में कभी भी

नागा नहीं करते।

—उपदेश प्रासाद।

जिनमूर्ति के दर्शन पूजन की महिमा

(१) नयनों से प्रभुजी का दर्शन करने पर हजार वर्ष के उपवास का पुन्य होता है।

(२) प्रभुजी को वंदन करने पर उससे अनंतगुना पुन्य होता है।

(३) वंदन से सौ गुना लाभ प्रभु का पूजन करने पर मिलता है।

आप भी यदि अधिक लाभ कमाना चाहते हैं। तो प्रभुजी का पूजन प्रतिदिन कीजिये।

— उपदेश प्रासाद।

धैर्य की व्याख्या

"दुःख और आपत्तियों में भी हृदय एक प्रकार की मधुरता का अनुभव करता रहता है" धैर्य की व्याख्या इससे अधिक अच्छी कौनसी हो सकती ?

जो दुःख में भी आनंदी रहे वही धैर्यवान।

—सुवाक्य मञ्जूषा।

अज्ञानी कौन ?

सूरज के आते ही अंधकार गायब हो जाता है वैसे ही आत्मा में ज्ञान आने पर (प्रकट होने पर) तृष्णा का अंधकार नहीं रहता।

प्रभुजी के दर्शन पूजन से लाभ

(५) मन्दिरजी जाने के लिये राह में चलने लगे कि पाच उपवास का पुन्य होता है।

(६) मन्दिर के अर्द्ध पथ आये तब पदरह उपवास का पुन्य।

(७) मन्दिर का दर्शन हुआ कि मासक्षमण का लाभ।

(८) और जब मन्दिरजी के निकट आये तब छ मासी उपवास का पुन्य होता है।

अत मन्दिरजी जाने में कभी नागा न होने दें।

—उपदेश प्रासाद।

श्रद्धालु श्रावक

श्रावक —आपने कल फरमाया था कि प्रभुजी के दर्शन करने की इच्छा से मन्दिर के निकट आवे तो भक्त को छ मासी उपवास का फल मिलता है। कृपया आगे फरमाईये।

गुरु—सुनिये! जिनेश्वर देव की प्रतिमा के दर्शन का अभिलाषी जब मन्दिर क दरवाजे तक पहुंचता है तो उसे एक वर्ष क उपवास का लाभ होता है। एवं तीन प्रदक्षिणा करने स सौ वर्ष क उपवास का फल मिलता है।

इसीलिये जो समझदार हैं वे मन्दिर जाने में कभी भी

नागा नहीं करते।

—उपदेश प्रासाद।

जिनमूर्ति के दर्शन पूजन की महिमा

(१) नयनों से प्रभुजी का दर्शन करने पर हजार वर्ष के उपवास का पुन्य होता है।

(२) प्रभुजी को वदन करने पर उससे अनतगुना पुन्य होता है।

(३) वदन से सौ गुना लाभ प्रभु का पूजन करने पर मिलता है।

आप भी यदि अधिक लाभ कमाना चाहते हैं। तो प्रभु जी का पूजन प्रतिदिन कीजिये।

— उपदेश प्रासाद।

धैर्य की व्याख्या

"दुःख और आपत्तियों में भी हृदय एक प्रकार की मधुरता का अनुभव करता रहता है" धैर्य की व्याख्या इससे अधिक अच्छी कौनसी हो सकती ?

जो दुःख में भी आनदी रहे वही धैर्यवान।

—सुवाक्य मञ्जूषा।

अज्ञानी कौन ?

सूरज के आते ही अंधकार गायब हो जाता है वैसे ही आत्मा में ज्ञान आने पर (प्रकट होने पर) तृष्णा का अधकार नहीं रहता।

जिसे अधिक तृष्णा है वह अज्ञानी है।

—कर्मग्रन्थ १ ला

कायर

सुख आने पर हर्षित होने वाला और दुःख में दीनता करने वाला कायर है।

— ज्ञानसार।

दानवीर

अभयदान देने वाला यानि दूसरे जीवों की जान बचाने वाला ही सच्चा दानवीर है।

—उपदेश प्रासाद।

शूरवीर

अपनी इन्द्रियां को जीतने वाला यानी अपनी जीभ से अभक्ष्य (आलु आदि) नहीं खाने वाला और पाप कराने वाले सिनेमा, परस्त्री का रूप आदि को अपनी आंख से नहीं देखने वाला ही सच्चा शूरवीर है।

—उपदेश प्रासाद।

कारखाना

कपड़े की मीलें कपड़ा बनाने के कारखाने है।
शक्कर की मीलें शक्कर बनाने के कारखाने हैं।
इत्र की भट्टियां इत्र बनाने के कारखाने हैं।

और मनुष्य का शरीर है, कपड़ा, शेक्सर व इत्र को बिगाड़ने का कारखाना।

—शांत सुधारस्म भावना।

बचें

मुकद्दमाबाजी करना बिल्ली की खातिर गाय खोना है। अत मुकद्दमाबाजी से बचें।

नहीं

प्रभु भजन में पाप नहीं।
मौन रखने में कलह नहीं।
सच्चे धर्मी को भय नहीं।

—हितोपदेश।

चन्दरोज में गायब

सूर्य के डूब जाने पर उसका प्रकाश कुछ ही मिनिटों में अवश्य गायब होता है। उसी तरह किसी सुखी और धनी मनुष्य के जीवन में से भी जब धर्म चला जाता है तो उसका सुख चन्दरोज में ही अवश्य गायब होता है।

—योगशास्त्र।

नाश होता है

सूर्य के आने पर अंधकार का नाश होता है।
क्रोध करने से प्रीति का नाश होता है।
एक धर्म करने से पाप और दुःखों का नाश होता है।

—धर्मबिन्दु।

तप

तप के प्रभाव से विघ्न के बादल बिखर जाते हैं। दुष्ट भावनायें भस्मीभूत होती हैं एवं अनेक लब्धिया हासिल अत उपवास आदि तप किया करें।

—तपपद पूजा।

नेचर क्यॉर

नगे पैरों चलना स्वास्थ्य के लिये हितकर है अत जहा बन पड़े जूते बूट आदि न पहिने।

—एडाल्फ जूस्ट।

पाउडर

कोकिला—बहिन! मेरा चहेरा काला सा क्यों रहता है?

चतुरा—आप पाउडर लगाया करती है उसमें चमड़ी को हानि पहुँचाने वाले पदार्थ होते हैं। अतः आज से किसी तरह का पाउडर मत लगाना।

—स्वास्थ्यरक्षा।

तो

डरो तो पाप से।
व्यसन सीखो तो दान का।
लड़ो तो कर्म से।
मारो तो मोह को।

—सुभाषित संग्रह।

अभिलाषा

धन आदि पाने की तीव्र अभिलाषा करने से उनकी ही प्राप्ति में बाधा पहुँचाने वाले अंतराय कर्म बधते हैं।

अत लालसा का त्याग करें।

—कर्मग्रन्थ १ ला

मनुष्य हैं न ?

देवों की जिन्दगी ऐशो आराम करते बीतती है।

नारकी जीवों की जिंदगी दु ख सहन करते बीतती हैं।

उत्तम मनुष्यों की जिन्दगी धर्म करते बीतती है।

पशुओं का जीवन खान व सोने में जाता है।

आप उत्तम मनुष्य हैं न ?

—उपदेशसार।

अपने-पराये

दोष देखो तो अपने।

गुण गाओ तो पराये।

दगा करो तो कर्म से।

बोलो तो सत्य,

और रक्खो ईमानदारी।

—योगशास्त्र।

नजर

तेरी मां, बहिन या स्त्री की ओर कोई बुरी नजर से देखे तो तुझे पसंद नहीं है। अतः तू भी किसी की पत्नि या बहिन की ओर बुरी नजर न कर।

—योगशास्त्र।

विकृति

शक्कर खाने से जैसे गधों का स्वास्थ्य बिगड़ता है। वैसे ही धर्म के उपदेश से भी महापापी जीवों के मन की मलिनता बढ़ती है।

—सुभाषित।

क्या लाभ ?

सतीश—पूरा अर्थ समझे बिना सामायिक, प्रतिक्रमण आदि करने से क्या लाभ ?

गुरु—दवाई की गोलियों के बनाने का तरीका न जानते हुए भी हम उनका सेवन करते हैं और उनसे बिमारी भी जाती है। इसी तरह अर्थ समझे बिना की हुई धर्म-क्रिया भी कुछ फल तो अवश्य देती है।

—उपदेश प्रासाद।

तेज कुल्हाडे

दान और सन्तोष ये दोनों दरिद्रता की जड़ों को काटने

वाले तेन बुन्हाड़े हैं।

—योगशास्त्र।

प्रतिक्रमण

प्रतिदिन मँजने वाले पीतल के बर्तन भी चमकीले रहते हैं, इसी तरह हमेशा सुबह शाम प्रतिक्रमण करने वाले गृहस्थ की आत्मा भी अधिक मैली नहीं बनती।

—आचारोपदेश।

सक्रामक रोग

छूत की बिमारी से बचना है ? तो होटल की चाय आदि को त्याग दें। संक्रामक रोग के अनेक रोगियों के जूठे कप, गिलासों का उपयोग रोग फैलाता है।

—स्वास्थ्य शिक्षा।

कोसो दूर

अपने हाथों से दान देने वालों और दिल में सन्तोष रखने वालों से गरीबी कोसों दूर ही रहती है।

—योगशास्त्र।

पास होने की कुञ्जी

पढ़ाई करने के साथ ही साथ अपने माता-पिता विद्यागुरु आदि गुरुजनों का उचित विनय करने वाले विद्यार्थी फेल नहीं होंगे।

—योगबिन्दु।

कृपण

भस्मक रोग का रोगी भर पेट खाते हुए भी दिन ब दिन कमजोर होता जाता है। वैसे ही जिन्हें अधिक लोभ है वे काफी धन पा जाने पर भी कृपण ही रहते हैं।

—उत्तराध्ययन सूत्रम्।

बैरिस्टर

यह मानव जीवन कर्म जंजीरों से जकड़ी हुई आत्माओं को सर्वथा मुक्त कराने वाला बैरिस्टर है, इसकी फीस है सर्व-विरति।

आप भी बैरिस्टर मानव जीवन को तो पा चुके हैं, अब इसकी फीस चुकाकर यानि सर्व विरति लेकर कर्म के बन्धनों से अपनी आत्मा को छुड़ाएं।

—सर्वविरति यानि जैनीदीक्षा।

सब से पुराना कौन ?

जैन धर्म की स्थापना कब हुई ? यह पता लगाना असम्भव है। हिन्दुस्थान के धर्मों में जैन धर्म सबसे प्राचीन है।

- जी. जे. आर फरलाग।

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद (राष्ट्रपति) के उद्गार

श्री महावीर स्वामी के उपदेशानुसार चलने से ही शांति प्राप्त हो सकेगी। आज के संघर्षमय और अशांत संसार में

इस साधु पुरुष के उपदेशानुसार चलने से शांति प्राप्त हो सकेगी।

अनूठीराय

(१) खाना चाहते हैं ? तो अपने अभिमान को खाइये।

(२) मारना चाहता है ? तो काम क्रोध लोभ को मार।

(३) जीतना चाहते हो ? तो अतरग दुश्मनों को जीतो।

(४) सुनना चाहते हो ? तो जिनवाणी सुनो।

(५) पढ़ना चाहते हो ? तो ऐसी किताबें पढ़ो।

अमृत की बूंदें

(१) तैरना चाहते हैं। ? तो ससार समुद्र को तैरिये।

(२) डूबना चाहता है ? तो ज्ञानसागर में डूब।

(३) गाना चाहता है ? तो प्रभु भक्ति के भजन गा।

(४) पहिनना चाहती हैं ? तो लज्जा का वस्त्र पहिनो।

(५) निरखना चाहती है ? तो प्रभुप्रतिमा को निरखो।

स्वास्थ्य रक्षा

सूर्य उदय के पहिले एवं सूर्य डूबने के पश्चात किया हुआ भोजन ठीक तौर से पचता नहीं है।

अत सूरज ऊगने के पहिले व सूर्य डूबने के बाद कुछ भी न खाए।

स्वास्थ्य रक्षा

साबुन से स्नान करने से चमड़ी की आवश्यक चिकनाहट धुल जाती है। जिससे कई बिमारियां आती हैं।

अतः सस्ता या महंगा किसी भी तरह का साबुन स्नान में इस्तेमाल न करें।

निदान

अधिक खाने से आलस आता है और अधिक धन पाने से आता है अभिमान।

अतः न अधिक खायें और न अधिक धन ही पाना चाहें।

अञ्जलि

अज्ञान के अन्धपटल से अन्धे बने हुए जीवों की आखों में ज्ञान का सुरमा लगाकर प्रकाशित करने वाले गुरुदेवों को क्रोड़ क्रोड़ प्रणाम।

तकदीर की बात छोड़कर

आत्मा को उन्नत बनाना है? तो तकदीर की बात छोड़ कर धर्म कार्य में तजवीज यानि जबरदस्त पराक्रम करने लगो।

तन्दुरुस्त रहने का तरीका

कबूतर, चिड़ियां आदि प्राणी सूरज डूबने के बाद यानि

रात को कुछ खाते पीते नहीं हैं। इसलिये न तो उनके लिये वहीं अस्पताल ही खुले हैं और न वे अक्सर बिमार ही होते हैं।

आप भी यदि तन्दुरुस्त रहना चाहते हैं तो रात को खाना पीना सर्वथा छोड़ दें।

तीन तरीके

धन कमाने का तरीका सद् व्यवहार यानि ईमानदारी।
बल कमाने का तरीका सदाचार यानि ब्रह्मचर्य पालन।
पुन्य कमाने का तरीका सद्विचार यानि शुभ भावनाएं।

मजा

दातारों को मजा यही, धन देने और खिलाने में।
कजूंसों को मजा यही, धन जोड़ जोड मरजाने में॥

आप यदि आज तक कजूस रहे हों तो अब से दाता बन जाइये व सच्चा मजा लूटें।

भाषण

मौन सर्वोत्तम भाषण है। जहां एक शब्द बोलने की आवश्यकता हो वहां दो न बोले।

तिरने वालों से

(१) निंदा करना चाहती हो? तो अपनी निंदा करो।
(२) धोना चाहती हो? तो अपनी आत्मा को धोओ।

(३) देना चाहते हो ? तो जीवों को अभयदान दो ।
(४) कमाना चाहता है ? तो पुन्य ही कमा ।

उलहना

आज तू कहता है कि मुझे काम काज की वजह से प्रभु-पूजन के लिये, व्याख्यान सुनने के लिये एवं सामायिक करने के लिये समय नहीं है । लेकिन मृत्यु तो तुझे सहसा उठा ले जायगी । वह यह नहीं देखेगी कि तेरे काम पूरे हो चुके हैं कि अधूरे हैं ?

अतः हर हालत में धर्म करते रहो ।

जिनाज्ञा

यदि आप क्रोधी हैं, तो शांत बन जाइये ।
यदि आप घमंडी हैं, तो नम्र बन जाइये ।
यदि आप जालसाजी करते हों, तो अब से सरल बन जाइए ।
और यदि लोभी हों तो संतोषी बनो ।

दशवैकालिक सूत्र ।

अमृत सी मीठी बातें

(१) शुद्ध करना चाहते हो ? आत्मा को शुद्ध करो ।
(२) लड़ना चाहते हैं ? तो अपने कर्मों से लड़ो ।
(३) देखना चाहते हो ? तो अपने दोषों को देखो ।

(४) दौड़ना चाहता है ? तो मुक्ति की ओर दौड़ ।
(५) सुख चाहते हो ? तो निनाशा का पालन करो ।

अदालत

जज—तुम लोगों ने सारे शहर को गंदा कर दिया है ।
सज्जन—नहीं जी ! शहर के सिनेमा, होटल, और फैशन ने हमें ही गन्दा कर डाला है ।
जज—तो फिर शहर को ही छोड़ क्यों नहीं जाते ?
सज्जन—शहर को यदि नहीं छोड़ें फिर भी सिनेमा, होटल व फैशन को तो छोड़ ही देंगे ।

—धर्मरत्न प्रकरण ।

सद्गति की कुंजी

अनीति के धन से अवगति यानि दुर्गति होती है सद्गति चाहते हो तो गरीबी को हसते मुंह अपनाना लेकिन अनीति कभी मत करना ।

—धर्मबिंदु ।

बड़ी भूल

तूने अनेक भूलें की है, फिर भी तू मानता है "मैं कभी भी भूल नहीं करता" यही तेरी सब मे बड़ी भूल है ।

—सुवाक्य मंजूषा ।

पहिचान

दुर्जनों की जीभ में गुड और दिल में विष होता है ।

यदि आप किसी से मधुर बोलते हैं। लेकिन दिल से उसे ठगना या उसका बुरा करना चाहते हैं तो आप भी दुर्जन हैं।

—धर्मरत्न प्रकरण।

तत्त्वज्ञान

किसी दिलोजान दोस्त का केवल नाम सुनने से जो आनन्द आता है। उससे कई अधिक प्रेम उसकी फोटू देखने से उमड़ता है।

इसी तरह प्रभुजी का केवल नाम जपने से जितने भाव बढ़ते हैं उससे करोड़ों गुनी भावनाए प्रभुजी की प्रतिमा के दर्शन से बढ़ती है।

अत प्रभु प्रतिमा के दर्शन व पूजन प्रतिदिन कीजिये।

—प्रवचनसारोद्धार।

श्रेष्ठमानव

गाय के पेट में गये हुये घास का दूध बनता है।

शुक्ति (सीप) के मुह में गया हुआ पानी मोती बनता है।

खेत की मिट्टी में पटे हुए नाज के एक दाने से अनेकों दाने बनते हैं।

लेकिन मनुष्य के पेट में गये हुये दूध, पानी व अन्न का पिशाब और विष्ठा बनती है।

फिर भी हम (मानव) श्रेष्ठ कैसे ? यदि उच्च दर्जे का धर्म नहीं करते।

—अशुचि भावना।

शास्त्र वचन

"दुषमकाल जिनबिंब जिनागम, भवियनकू आधारा निर्नंदा तोरी अगियन में अविकारा ॥

पांचमे आरे में संसार से तिरने का साधन जिनमूर्ति और जैनशास्त्र हैं। उनमें भी निनेश्वर प्रभु की प्रतिमा अत्यंत उपकारी है, क्योंकि शास्त्रों को तो पढ़े लिखे लोग ही बांच सकते हैं और जिनमूर्ति से तो अनपढ़ लोग भी अपना कल्याण कर सकते हैं।

—वीरविजयजी पूजा।

दिक्कत

बार बार खाना दिक्कत है और दुखी का चिह्न है। जो सुखी हैं, वे लम्बे अर्से तक भोजन नहीं करते। देखिये! पहले आरे के मनुष्य तीन तीन दिन के अंतर से ही भोजन करते थे और हमसे कहीं अधिक सुखी थे। आप भी बार बार खाना छोड़कर सुखी बन।

कुछ अर्से से भुलावे में पड़ी हुई जैनजनता को अपने कर्त्तव्य का खयाल कराने वाले इस भजन (स्तवन) को हरेक जैनी याद करके अवश्य कंठस्थ करे।

स्तवन

(तर्ज भारत का डंका आलम में)

जिनवर की प्रतिमा पूजन का,
फरमान किया प्रभु महावीर ने ।
अरु सूत्र सिद्धांत में दरज किया,
सुधर्मा स्वामी गणधर ने ॥ जिन ॥१॥

सूत्र रायपसेणी को देखो,
वहा प्रतिमा पूजन को पेखो ।
झूठे सशय अब दूर फेंको,
खुद ज्ञान सुधारस पीकर के ॥जिन ॥२॥

है जीवाभिगम शास्त्र बड़ा,
जिनबिंब का वर्णन वहा है कहा ।
क्यों धोखे में तू जाय पड़ा,
समझा दिया सच्चे गुरुवर ने ॥जिन ॥३॥

अग छठवा ज्ञाताधर्म कथा,
प्रतिमा का पूजन वहां भी कहा ।

प्रभु पूजन से क्यों दूर रहा,
प्रभु पूजन भवि भवतारक है ॥जिन ॥४॥
प्रभु के दर्शन की क्या कहनी,
भये आर्द्रकुमार महाज्ञानी ।
है जैनागम की यह वानी,
भविजन प्रभु दर्शन करते हैं ॥जिन ॥५॥
फूलपूजा से फल को पाया,
हुआ कुमारपाल महाराया ।
भावी गणधर का पद पाया,
ज्ञानी जिन पूजन करते हैं ॥जिन ॥६॥
जिनप्रतिमा जिनसम होती है,
दर्शन से दुःख को खोती है।
प्रभु पूजा पाप को धोती है,
जितेन्द्र प्रभु ! मोह पार करो ॥जिन ॥७॥

भगवान बनो

हरेक जीव को जैन बनाने की तीव्र भावना वाली आत्माएं भविष्य में भगवान यानि तीर्थंकर बनती हैं।

आप भी सच्चे जैनी बनकर हरेक को जैनी बनाना चाहें।

रोगनाशक दवाई

सूरज उगने के बाद भी एक प्रहर तक यदि कुछ भी खाया पीया न जाए तो पेट आदि के अनेक रोग बिना दवाई के ही मिट जाते हैं।

सूर्यास्त से लगाकर दूसरे दिन एक प्रहर सूर्य चढ़े तब तक कुछ भी न खाना अत्यन्त हितकर है। प्रहरकरीब ३ घटे।

—जलचिकित्सा ग्रंथ।

मा और बेटा

बेटा—आज हमें उल्लू, साप, कौए आदि प्राणी दीखते हैं, इन जीवों ने ऐसा कौनसा पाप किया होगा, जिससे इन्हें ऐसा नीच अवतार मिला।

ज्ञानी माता—भाई! अक्सर रात को भोजन करने के पाप से आत्माए दूसरे जन्म में साप आदि बनती हैं।

अत. तू कभी भी रातको कुछ भी मत खाना।

—योगशास्त्र।

शक्कर दूध में ही क्यो ?

भोला बाबू—मा! तू दूध में तो हमेशा शक्कर डालती है और छाछ में क्यों नहीं डालती ?

माता—दूध स्वय कुछ मीठा है, अत उसे अधिक मीठा करने

को उसमें शक्कर डालती हूँ और छाछ में नहीं।

जिनमें कुछ गुण होते हैं उन्हें ही अधिक गुणी बनाने क लिये उपदेश, उलहना आदि दीया जाता है।

कर्म का काम

लाला—बाई! तूने मेरे तो दो हाथ बनाये और मेरे बडे भाई के एक ही हाथ क्यों बनाया?

माता—(कुछ उदास बनकर) लाला! हाथ, पैर और बुद्धि माता पिता के दीये हुये नहीं हैं। इन्हें तो जीव अपने कर्मों से पाता है।

जिन्हान पूर्वभव में जीवों की हिंसा की है, वे प्राणी यहा टूटे, लंगड़े, रोगी बनते हैं।

—योगशास्त्र।

सच्चा कारण

नन्हा—जीमा! चचाजी कभी भी बोलते क्यों नहीं?

दादाजी—बाबू! तेरे चाचा बोल ही नहीं सकते, वे गूगे हैं।

नन्हा—चचा गूगे क्यों बने?

दादाजी—झूठ बोलने के पाप से जीव परभव में गूगे एव अनेक तरह के मुह के रोगी बनते है? अत तू

हमेशा सत्य बोलना।

—योगशास्त्र।

रक्षण में लगे रहे

श्रावक—(हाथ जोड़कर) अन्नदाता! हमारे समुदाय में बड़ी बड़ी आसामियां ठंडी रह गई है, इसका क्या कारण होगा?

गुरु—जैसे तनिक आग से ढेरों रुई जलकर खाक हो जाती है। वैसे ही देवद्रव्य का भक्षण जिस घर में होने लगता है वह घर बरबाद होता है और उसका यश भी कलङ्कित होता है।

अतः हरदम देवद्रव्य के रक्षण में लगे रहिये।

—आत्मप्रबोध।

दो सखी

प्रमिला—सुशि! चेहरा सुंदर दीखे इस वास्ते मुंह पर क्या लगाना चाहिये?

सुशीला—प्रमि! कुलवती लड़कियों को अपने मुंह पर लज्जा के सिवाय और कुछ भी नहीं लगाना चाहिये।

—धर्मरत्न प्रकरण।

दो मित्रों का संवाद

सोहन—क्या भाई! तुम तो मन्दिर जी में पूजा करने लगे। क्या आप मन्दिरमार्गी हो गये हैं?

मेरुलाल—प्रभुपूजा करना तो हरेक जैनगृहस्थ का कर्त्तव्य हैं जितने भी ओसवाल हैं वे तो सब ही जिन-मूर्ति का वंदनपूजन करने वाले पहिले से ही हैं।

—ओसवालजाति का इतिहास

शंका समाधान

सोहन—मूर्तिपूजन में तो पानी आदि के जीवों की हिंसा होती है। इसमें धर्म कैसे ?

मेरुलाल—आप लोग साधुओं को वंदना करने जाते हो, वहां रास्ते में जीवहिंसा नहीं होती क्या ? जिनमूर्ति की पूजा करना जिनाज्ञा है। विशेष कल कहूंगा।

विशेष खुलासा

मेरुलाल—पूजा के निमित्त होने वाली जीवहिंसा, स्वरूप-हिंसा कहलाती है, उसमें पाप नहीं बंधता और पूजन से तो ऐसे पुन्य बंधता है।

सोहन—तब तो मैं भी आज से पूजन करूंगा और मेरे साथिओं को भी प्रभुपूजन कराने के लिये लाऊंगा।

नाइलॉन की साड़ी

चतुरा-क्यों सखी ! आज उदास क्यों है ?

सरला-कहते कहते तीन दिन हो गये मगर नाइलॉन की साड़ी नहीं लाते हैं।

चतुरा-बहिन ! खानदान औरतों को ऐसे कपड़े पहिनने उचित हैं क्या ? कुलवती महिलाओं को अपनी खानदान के अनुरूप ही वेश-भूषा करनी चाहिए।

—धर्मरत्न प्रकरण।

सच्चा धर्मी

दूसरों के सुख को देखकर जलने वाला पापी है, और दूसरों के दुखों को देखकर जलने वाला यानि उनके दुखों को दूर करने के लिए बार बार सोचने वाला और यथाशक्ति यत्न करने वाला सच्चा धर्मी है।

आप भी धर्मी हैं न ? क्या आप दूसरों के दुःख दूर करने को सोचते रहते हैं ?

—योगशास्त्र।

आंखों की रोशनी

मनसा वाचा कर्मणा ब्रह्मचर्य का पालन करने से बुढ़ापे में भी आखों की रोशनी अक्सर कम नहीं होती। आप भी आखों की रोशनी बढ़ाने के लिये अब से ब्रह्मचर्य का पालन करें।

—योगशास्त्र।

नाश

प्रभुजी के दर्शन से पापों का नाश।
भोजन करने से भूख का नाश।

सुनने से सुमति का नाश।

सिनेमा देखने से स्वास्थ्य, सुमति और सदा-
होता है।

अहिंसा प्रेमी !

) के सेवन से नौ लाख मनुष्या तक

म भयंकर पाप से बचोगे ?

—विविध प्रश्नोत्तर।

द रक्खो

बेईमानी करके भी अपने परिवार
है। याद रक्खो, परभव में उन पापों
पीडाए केवल तुम्हे ही सहन करनी होगी।
अपने पेशे में ईमानदारी रखकर अधिक पाप से
बचो।

दैवी शक्तियां

ब्रह्मचर्य के प्रभाव से दैवी शक्तियां प्राप्त होती हैं। आप जानते हैं ? ब्रह्मचारी पेथडकुमार का दुपट्टा यदि कोई रोगी ओढ़ता था तो उसके रोग बिना किसी दवाई के ही मिट जाते थे। आप भी मन, वचन काया से

विद्वान की कलम

जैन धर्म द्वारा प्रतिपादित चारित्र मानवजीवन की उन्नति की दृष्टि से बहुत ही लाभदायक व हितकारी है।

—डॉ ए गिरनॉट, फ्रांस।

कन्हैया की माता

कन्हैया—माँ! यह क्या है?

माता—बाबू! यह कुजड़े का टोकरा है। इसमें शक्करकद भरे हैं।

कन्हैया—माँ! क्या शक्करकद खाये जाते हैं?

माता—गवार लोग इसे खाते हैं। हम तो जैन हैं। जैनलोग शक्करकद कभी भी नहीं खाते।

दयालु माता

कन्हैया—माँ! हमें शक्करकद क्यों नहीं खाने चाहिये?

माता—लाला! शक्करकद के एक छोटे से छोटे टुकड़े में भी कई करोड़ (अनंत) जीव होते हैं।

अतः जो जैन हैं, वे पाप से बचने के लिये शक्करकद खाते नहीं, पकाते नहीं एवं खरीदते भी नहीं हैं।

—श्री पन्नवणासूत्र।

तेजु का प्रश्न

तेजु—शक्करकंद खाने में खूब पाप लगता है, अतः हम दोनों भाई अब शक्करकंद कदाई नहीं खाएंगे। क्या मूली खाने में भी अधिक पाप है ?

माता—हां लाला ! मूली खाने से भी अनंतजीवों का नाश होता है।

तेजु—तब तो मा ! हम मूली भी नहीं खायेंगे।

—पन्नवणा सूत्र।

ज्ञानी कॉलेजियन

ललित—दोपहर को बाग में आओगे न ?

सुशील—ना भाई ! मुझे दोपहर को अवकाश नहीं है ?

ललित—इतना क्या काम है ?

सुशील—पिताजी को स्नान करवाना, उनके व माताजी के कपड़े धोना इत्यादि लाभ का काम हैं।

—योगबिंदु।

कर्तव्य

ललित— सुशील ! तुम तो कॉलेजियन हो, फिर माता पिता के कपड़े धोने की मजदूरी को क्यों चाहते हो ?

सुशील—भाई ! अपने माता पिता की सेवा करना हरेक का

कर्त्तव्य है। एव मातापिता की सेवा मे पुन्य भी तो होता है।

—तत्त्वार्थटीका।

वे मूर्ख है

सरला—(अपने पति से) आपने माताजी ने मुझे बहुत तग कर दीया है। आप उन्हें कुछ कहते क्यों नहीं ?

सज्जनलाल—मेरे माताजी कभी किसी को एक शब्द भी अनुचित नहीं कहती है। कुलवान लड़कों के लिये तो पिताजी देव और माताजी देवी हैं।

लुगाई के वचनों से प्रेरित होकर जो मा बाप से अनबन करते हैं, वे मूर्ख हैं।

—ठाणाग सूत्र।

यश और सुख

कचन—सखी ! तू तो अपने सास की खूब सेवा भक्ति करने लगी ?

चतुरा—बहिन ! सास-ससुर तो हमारे मांइत[1] हैं। इनकी सेवा से तो हमें यहां यश और सुख मिलता है, एव परभव में सुख मिलेगा।

—धर्मग्रथ १ ला

१ माता पिता।

किल्ली

अधिक मुनाफा लेने वालों के यहां ग्राहक कम आते हैं। ग्राहक बढने से ही कमाई बढती है।

कमाई करने की किल्ली है-नफा कम लेना और ईमानदारी रखना।

—हाउ टु वीन फ्रेन्डज।

थकावट

मोतीलाल-क्यों जी, खूब थके से मालूम होते हैं?

शिवराज-जब मैं व्यापार में ईमानदारी रखने लगा हूं तब से ग्राहक दिन दुगुने और रात चौगुने बढ़ रहे हैं। ग्राहकों को सौदा देते देते ही थका हूं।

आप भी एक साल तक तो ईमानदारी रखकर देखें।

—योगबिन्दु।

पुण्य का प्रभाव

धरती पर चलने में भी किसी के पैर डगमगाते हैं और हे युवक! तेरे चरण से तो धरती थर थर कांप उठती है, यह सब पुन्य का ही प्रभाव है।

—पुण्यकुलकम्।

प्रार्थना-श्री जिनस्तवन

(तर्ज—नजरटुक महेर की करके)

करो गर महेर ऐ स्वामी ! अरज मैंने गुजारी है ।
अनादि काल से भगवन,
अनतो देह धारी है ॥ करो ॥ १ ॥
देव की देह को भगवन्,
बहुत सी बार मैं पाया ।
नरक की देह भी भगवन,
अनती बार पाया हूँ ॥ करो ॥ २ ॥
अनते काल तक भटका,
पशु की देह को पाता ।
मनुज भव पुन्य स पाया,
करम दल चूर करने को ॥ करो ॥ ३ ॥
मिला है योग सद्गुरु का,
सही जो धर्म भी पाया ।
करु श्रम यत्न तिरने को,
निकट संसार सागर है ॥ करो ॥ ४ ॥
मुक्ति को दान मैं पाऊ,
प्रेम के भानु कर चाहु ।
जिनेन्द्र नाथ ! बन जाऊ,
लहेर जो महेर की पाऊ ॥ करो ॥ ५ ॥

जानें

"जो पीयेगा शराब उसका होगा खाना खराब" शराब, भंग तमाकू आदि नशीली चीजें स्वास्थ्य व चित्त को बिगाड़ने वाली हैं। अतः उन से कोसों दूर रहिये।

—योगशास्त्र।

उपाय

भगवान की भक्ति ही सब दुःखों से मुक्ति पाने का और चित्तशुद्धि का श्रेष्ठ उपाय है।

ब्रह्मचर्य रक्षा के नियम

(१) सादी रहन सहन।
(२) निर्विकार आहार।
(३) सत्संगति।
(४) सत्साहित्य पढ़ना।
(५) पवित्रविचार और
(६) ईश्वरभक्ति।

किसका प्रभाव ?

बुढ़ापे में भी चेहरे पर लाली, आंख में रोशनी और चाल में फौजी ढङ्ग। यह सब किसका प्रभाव है ? ब्रह्मचर्य का ही तो।

औषध

शाम का भोजन देर से करने वालों को अक्सर स्वप्नदोष होता है। आप यदि तन्दुरुस्ती चाहते हैं, तो सूरज डूबने के बाद कभी कुछ भी मत खाइये।

—स्वास्थ्य शिक्षा।

तिजोरी

तक्दीर तिजोरी है और पुरुषार्थ है उसे खोलने की किल्ली। आपके तक्दीर की तिजोरी में जितना होगा उतना ही प्रयत्न करने पर पाओगे।

अत तक्दीर को बनाने वाले प्रभुपूजा, दान, ब्रह्मचर्य-पालन आदि शुभकार्य करें।

महान धर्म

ज्यों ज्यों आप अपने कसूरों को कबुल करते रहेंगे त्यों त्यों आपमें नम्रता का महान धर्म प्रगट होगा।

खोज

आप यदि निरंतर सुखी रहना चाहते हैं ? तो हर वख्त यह खयाल रक्खें कि आपके निमित्त कोई दुःखी तो नहीं हो रहा है ?

कर्त्तव्य

जिस कार्य में स्व पर का हित समाया हो वही कर्त्तव्य।

शांति

दूसरे जीवों को जितनी शांति दोगे उतनी ही तुम्हें शांति मिलेगी।

—भगवती सूत्र।

जैन

जो पतिव्रता स्त्रियाँ हैं, वे अपने पति को छोड़कर अन्य पुरुष की चाहना प्राण जाने कि नौबत आने पर भी नहीं करतीं। वैसे ही जो सच्चे जैनी हैं वे जिन भगवान को छोड़कर दूसरे देवों को कभी नहीं पूजते और न कभी नमते ही हैं।

—विवेकुलस्म।

निदान

आपको दु ख देनेवाला सिवाय आपके ही अशुभ कर्मों के और कोई नहीं हैं। आप जिन्हें दु.ख देनेवाला मानते हैं, वे तो निमित्तमात्र हैं।

अत यदि आप दु ख से छुटकारा पाना चाहते हैं ? तो अपने दुष्टकर्मों को दूर करने के लिये जैनधर्म का यथावत् पालन करें।

—ज्ञानसार।

चिनगारी

जैसे मामूली आग करोड़ों मन रूई को जला डालती है, वैसे ही थोड़ा सा भी गुस्सा वर्षो तक किये हुए धर्म को भस्म कर देता है। अत हर हालत में खामोश रहिये।

—विविधप्रश्न।

नीतिवाक्य

बात करते हँसनेवाला व राह चलते खानेवाला मूर्ख है।

अत न किसी से बात करते चलते हसे और न राह चलते कभी कुछ खाए ही।

विद्वान डॉक्टरों का मत

खून की चालीस बूंदों से सिर्फ एक बूंद जीवनरक्षक वीर्य बनता है। अत वीर्यरक्षा के लिये मन वचन काया से ब्रह्मचर्य का पालन करें।

आत्म रक्षा

अपने वीर्य की रक्षा करना आत्मरक्षा से कम नहीं है।

डरें व भजें

दूसरी पल में आप मृत्यु के वश होने वाले हैं ऐसा सोच-कर प्रतिपल पाप से डरें व प्रभु को भजें।

स्मरण करें

अपनी गलतियों का बार बार स्मरण करें ताकि दुबारा वैसी भूलें आप से न हों।

उत्थान

ऐशो आरामी से पतन होता है और त्याग व सयम से उत्थान।

प्रभुभजन

जैसे मत्र से साप का विष दूर होता है वैसे ही प्रभु के

गुणगान से पाप का भार कम होता है।

हाजमा

बार बार खाने से हाजमा बिगड़ता है। अतः जहां तक बन सके कम बार खाए और खाए भी परिमित।

—जल चिकित्सा।

पंचामृत

संग करें तो सज्जनों का।

लड़ें तो अांतर दुश्मनों से।

निंदा करो तो अपनी करो।

तारीफ करो तो गुणीजनों की।

फिकर देखो तो अपने ही।

शरीर और मन

मनुष्य का शरीर गधा सा और मन बन्दर सा है। शरीर से तप और मन से प्रभु का जप करने वाले ही इन से यथार्थ लाभ उठाते हैं।

कर्त्तव्य

चिंता करने से संसार में आज तक किसी की भी विपत्ति नहीं टली है। अतः कर्त्तव्यनिष्ठ बनें न कि चिंतातुर।

—सुभाषित संग्रह।

दुःखी कौन ?

जिन्हें आवश्यकताए अधिक हैं वे दुःखी हैं। अत' आवश्यकताए कम कीजिये व सादाजीवन जी कर सुखी बनें।

तत्त्ववाणी

जीव को जिन चीजों की अधिक लालसा होती है। अक्सर मरने पर वह जीव उमी मं जन्म लेता है।
जैसे—शक्कर का शौकीन ईग बनता और इत्र का शौकीन पौधे का फूल। क्या आप ऐसे अवतार चाहते हैं ?

मौन

किसी भी बात का सोचकर उत्तर दें और जब कभी गुस्से में हो तब कुछ मिनिटों तक मौन रहें। साथ ही उस वक्त नवकारमत्र का स्मरण करने लगें।

महान बनें

यदि आप को महान बनना है ? तो अगरबत्ती की तरह स्वय कष्ट से जलकर औरों को सुगध की तरह सुख दें।

पुण्य कमाओ

पुन्य से मिली हुई सम्पत्ति को अपने महधर्मी भाईयों की भक्ति में खर्चो र नया पुन्य कमाओ।

शुभविचार

जिन भावनाओं का जीवन में बार बार अनुशीलन होता है अक्सर वैसी भावना ही मृत्यु काल में जीवों को स्फुरित होती है। अत अतकाल में शुभभाव लाने के लिये आज से ही प्रतिपल शुभ विचारों में रमण करने लगें।

भलाई

ईख, पीलने वालों को मधुर रस देता है।

चदन, घिसने वालों को सुगध देता है।

वृक्ष, अपने पर पत्थर फेंकने वालों को फल देता है। वैसे ही सज्जन वह है जो अपने को कष्ट पहुचाने वाले का भी कभी बुरा न करे किंतु उसकी भलाई करने को ही सदा तत्पर रहे।

सद्विचार

दिल के सद्विचार स्वर्ग और मुक्ति दिलाते हैं, तथा बुरे विचार दिलाते हैं नरकादि घोर दु ख।

अत स्वर्गादि को दिलाने वाले सद्विचारों में ही सदा लीन रहें।

किसे चाहते हैं ?

सौदा लेनेवाला ग्राहक आपको धन की कमाई कराता

है और आपके द्वार पर आया हुआ याचक पुन्य की।

आप किसे अधिक चाहते हैं?

सराहना करें

मुनि को खीर का दान देकर बार बार खुशी होने से शालीभद्र बने और लड्डू बहोराकर खेद करने वाला मम्मण शेठ। आप भी यदि किये हुए धर्म का पूरा फल चाहते हैं तो अपने द्वारा जो हो गये हैं उन सब धर्मकार्यों की मन ही मन सराहना किया करें न कि खेद।

जानते हैं?

देवद्रव्य का विनाश या भक्षण करने वाले शरीर से रोगी व रोटी के टुकड़े के लिए भी मोहताज बनते हैं।

तारीफ करें

किसी के भी शुभकार्यों की तारीफ यदि आप करेंगे तो आप भी पुन्य हासिल कर पाएंगे।

प्रभुपूजा

प्रभुपूजा करने से व दूसरों से करवाने से धनादि की प्राप्ति में रोड़ा अटकाने वाले पापकर्म दूर हटते हैं।

—धर्मग्रंथ १ ला।

जादूगर

आप जानते हैं? आप का मन एक ऐसा जादूगर है, जो

आपको क्षण में सफलता के शिखर पर चढ़ाता है और पल में गिराता है अवनति के गहरे गड्ढे में।

अतः प्रतिपल इससे सावधान रहते हुए उन्नत बनने के लिये इसे वश में करें।

बहादुर

वह बहादुर है, जो अपनी भूलों को साफ साफ मंजूर करता है। आप अपनी गलती को कभी छिपाना तो नहीं चाहते हैं न ?

राक्षस

मनुष्य जब धर्म के बदले धन,
विराग के बदले विलास और
समता के बदले ममता को अपनाता है तब वह मनुष्य मिटकर राक्षस सा बन जाता है।

उन्नति

शिष्टाचार के द्वारा ही आप उन्नति कर पाएंगे।

उपकारी

आप उसे अपना उपकारी समझें जो आपके दोषों का स्मरण कराए।

गर्त में

विलासी और लोभी आत्माएं नरक के गर्त में जा गिरती

है और आपके द्वार पर आया हुआ याचक पुन्य की ।
आप किसे अधिक चाहते हैं ?

सराहना करें

मुनि को खीर का दान देकर बार बार खुशी होने से शालीभद्र बने और लड्डू व्होराकर खेद करने वाला मम्मण शेठ। आप भी यदि किये हुए धर्म का पूरा फल चाहते हैं तो अपने द्वारा जो हो गये हैं उन सब धर्मकार्यों की मन ही मन सराहना किया करें न कि खेद।

जानते है ?

देवद्रव्य का विनाश या भक्षण करने वाले शरीर से रोगी व रोटी के टुकडे के लिए भी मोहताज बनते हैं।

तारीफ करें

किसी के भी शुभकार्यों की तारीफ यदि आप करेंगे तो आप भी पुन्य हासिल कर पाएगे।

प्रभुपूजा

प्रभुपूजा करने से व दूसरों से करवाने से धनादि की प्राप्ति में रोड़ा अटकाने वाले पापकर्म दूर हटते हैं।

—धर्मग्रंथ १ ला।

जादूगर

आप जानते हैं ? आप का मन एक ऐसा जादूगर है, जो

आपको क्षण में सफलता के शिखर पर चढ़ाता है और पल में गिराता है अवनति के गहरे गड्ढे में।

अतः प्रतिपल इससे सावधान रहते हुए उन्नत बनने के लिये इसे वश में करें।

बहादुर

वह बहादुर है, जो अपनी भूलों को साफ साफ मंजूर करता है। आप अपनी गलती को कभी छिपाना तो नहीं चाहते हैं न ?

राक्षस

मनुष्य जब धर्म के बदले धन,
विराग के बदले विलास और
समता के बदले ममता को अपनाता है तब वह मनुष्य मिटकर राक्षस सा बन जाता है।

उन्नति

शिष्टाचार के द्वारा ही आप उन्नति कर पाएंगे।

उपकारी

आप उसे अपना उपकारी समझें जो आपके दोषों का स्मरण कराए।

गर्त में

विलासी और लोभी आत्माएं नरक के गर्त में जा गिरती

हैं। अत न तो विलासी बनें और न लोभी ही।

जर्मन डॉक्टर

मनुष्य के दात न तो मासभक्षी पशुओं-बिल्ली, शेर आदि से मिलते हैं और न घासभक्षी पशु- गाय, बैल से ही।

मनुष्य के दांतों की बनावट बदर आदि फलाहारी प्राणियों से मिलती है। फलित यह हुआ कि जैसे घास हमारा भोजन नहीं है वैसे ही मास, मच्छली, अडे आदि भी मनुष्य का भोजन नहीं हैं।

—जर्मन डॉक्टर लुई कुने।

बिमारियो का कारण

नया कॉलेजियन—ऊपर आप लिख आये कि मास, मच्छी, अंडे आदि मनुष्य का आहार नहीं है। लेकिन आज भारतीय सरकार तो इन्हें खाद्य मानकर इनकी उत्पत्ति और उपयोग बढ़ाने को कहती है।

ज्ञानी प्रोफेसर—कलयुग के प्रभाव और हिंसक परदेशियों के संग के प्रभाव से यह सब हो रहा है मगर सोचिये आहार के तौर पर इन पदार्थों के उपयोग से तो हजारों मरीज अस्पतालों म कैन्सर, गठिया

आदि विमारिओं की पीड़ा झेल रहे हैं।

—"जलचिकित्सा" के आधार पर।

सुधरना जरूरी

माता पिता के अच्छे या बुरे आचरण और विचार का असर बच्चों पर पडता है। अत बच्चों के हित के लिये भी माता-पिता को सुधरना जरूरी है।

कैंची और सुई

कैंची और सुई दोनों ही लोहे के हैं। कैंची काटकर टुकडे करती है, अत दरजी उसे पैरों तले दबाता है मगर छोटी सी सुई को सिर पर चढ़ाता है क्योंकि वह जोड़ने का काम करती है। जो सगठन करते हैं वे ही स्तुत्य हैं न कि फूट बनाए रखने वाले।

सीख

दुश्मन के साथ भी भाले के बदले भलाई काम में लाईए।

भयकर पाप

महीश्वर (जिनाज्ञा) का विरोध करने से भयकर पापबध होता है। याद रहे! जिनप्रतिमा का जल-फूल आदि उत्तम द्रव्यों से पूजन करने की जिनाज्ञा है।

परदेशी विद्वान

खूब घी, दूध, मांस, मच्छली और मोहन भोग (मिठाई

वगैरह) खाना भूल है।

—डॉक्टर लुई कुने।

धन्यवाद या धिक्कार

शाकाहारी पशु बंदर आदि और घास खानेवाले प्राणी बैलादि भूख से मरने की नौबत आ जाय तो भी मास मच्छली आदि को खाना नहीं चाहते। लेकिन हम उन मनुष्यों की बुद्धि को धन्यवाद दें कि धिक्कारें? जो शाकाहारी होते हुए भी मच्छली, अंडे आदि खाने को उतारू हुए हैं।

कटु सत्य

वह मनुष्य एक विलक्षण पशु है। जो फल, फूल, मास, मदिरा सभी को उदरस्थ कर जाता है।

—जलचिकित्सा।

भेड़, बकरे और मच्छली आदि को देखकर उस पर सीधे दांत मारने का अपने को मांसाहारी कहलाने वाले मनुष्य का भी मन नहीं होता।

इससे सिद्ध होता है कि मांस मनुष्य का खाद्य कतई नहीं है।

—लुई कुने।

चिंतन

अपने सुख दुःख का सीधा सम्बन्ध अपने ही पूर्वकृत कर्मों

म हैं। अत आये हुए दु खों को अपने ही पाप कर्मों का नतीजा समझकर उदासीन बनें, उदास नहीं।

दुःख मे अवश्य कीजिए

दु ख के समय अपने पाप कर्मों को भोगने का अवसर आया जानकर सम्भाव में रहें। एव धर्म साधना अधिक करें।

सुखी

शरीर, धन, परिवार आदि पर ममत्व करने की बदौलत ही शरीर बिगड़ने पर और धन के चले जाने पर हमें दु ख महसूस होता है। अत इन चीजों पर से राग (ममता) हटाने का प्रयत्न कीजिये। जिससे आप हर हालत में सुखी रह सकेंगे।

पुराय बध

परिवार आदि की ओर से प्रतिकूलता, धनादि का नाश शरीर की बिमारी आदि मुसीबतों को प्रसन्नतापूर्वक सहन करने से पापकर्म जलकर खाक होते हैं एव नया पुन्यबंध होता है। अत तक्लीफों से घबरा न उठें।

हानि या लाभ

बर्फ, सोडावॉटर शरबत इत्यादि पदार्थ अस्वाभाविक है उनसे हानि अधिक होती है।

—जलचिकित्सा।

अनुकरण करें

आप यदि बुद्धिमान हैं तो अभयकुमार का,
यदि धनी युवान हैं तो जम्बूकुमार का,
सुखी हैं तो शालीभद्र का अनुकरण करें।
इन का अनुकरण यानि भागवती (जैनी) दीक्षा का स्वीकार।

स्वीकार करें

आप यदि बालिका हैं तो चंदनबाला की तरह,
यदि सुखी गृहिणी हैं तो बाहुबलीजी की बहन सुंदरी की तरह।
यदि दरिद्र हैं तो भी अनेक सुशील महिलाओं की तरह पांच महाव्रतों का स्वीकार करें।
महाव्रतों का स्वीकार यानि जैनी दीक्षा लेना।

अनुसरें

आप यदि छोटे बालक हैं तो अतिमुक्त कुमार को,
यदि पदाधिकारी हैं तो युवराजा को,
और यदि रोटी के लिये भी मोहताज हैं तो भी सम्प्रति-महाराज के पूर्वभव को अनुसरें।
इनका अनुसरण के माने हैं त्यागी (साधू) बनकर जीना।

ज्ञानी

सुख भोगने में तो आत्मा का पुन्य खत्म होता है। इस-में (सुख में) फूलना नादानियत है।

वह ज्ञानी है जो सुख के समय सुख देने वाले धर्म का ही अधिक सेवन करता है।

ओ स्वास्थ्य प्रेमी !

खांसी और क्षय जैसी बिमारियाँ तमाखू का धूम्रपान करने से होती हैं।

ओ स्वास्थ्य प्रेमी ! तू कभी भी बीड़ी सिगरेट आदि की चुगाल में मत आना।

इमारत के खंभे

समृद्धि की इमारत नैतिकता के खम्भों पर ही खड़ी रह सकती है। ज्यों ज्यों ये खम्भे (नैतिकता) कमजोर होते जाते हैं त्यों त्यों इमारत (समृद्धि) को खतरा बढ़ता जाता है।

—जेम्स एलन

सावधान !

झक्की और चिड़चिड़े लोग प्रभावशाली नहीं हो सकते तथा उन्हें देखकर औरों को नफरत होती है।

जीना सफल करें।

आप यदि साधूजी नहीं बन सकते हैं तो महाराना

कुमार पाल की तरह, मन्त्री वस्तुपाल की तरह और

महाराजा श्रीपाल आदि उत्तम गृहस्थों की तरह जिनेश्वर देव की पूजा, सद्गुरुओं एवं साधर्मिक बन्धुओं का विनय और भक्ति करके अपना जीना कुछ सफल करें।

गुरु स्वागत भजन

तर्ज— जिनमत का डंका आलम में

फरमान प्रभु श्री महावीर का कहने ये मुनिवर आये हैं,
कर दर्शन अब हम इन सबका दिल में अति ही हर्षाये हैं।
फरमान १

जीव हिंसा कभी न ये करते हैं, हरदम सचाई धरते हैं,
और चोरी को पूरी तजते हैं, फुरमाया जिनमत वालों ने
फरमान २

ब्रह्मचारी सदा ये रहते हैं, एक पैसा भी ये नहीं रखते हैं,
इसविध मुनि संयम धरते हैं, धन्य है धन्य है धन्यमुनि तुमको,
फरमान ३

सफरें सब पैदल करते हैं, नहीं जूता पैरों में धरते हैं,
ये खुशी से तकलीफ सहते हैं, जय हो जय हो जय मुनिजन की,
फरमान ४

रम फूलों का भौंरे पीते हैं, नहिं पीडा उन्हें ने करते हैं,
इसविध मुनि गोचरी फिरते हैं धन्य है धन्य जीवन मुनिजन का,
फरमान ५

जल उबला हुआ ही पीते हैं, नीर कच्चा कभी नहीं छूते हैं
देखो कैसा अच्छा यह जीवन है,धीर हैं वीर हैं मुनिवर सब ही,
फरमान ६

मूछ आदि के केश जब बढ़ते हैं,तब हाथों उखाड़ दूर करते हैं,
इस विधि को लु चन कहते हैं, है बड़ी तपस्या इन सब की।
फरमान ७

उपदेश दया का देते हैं झूठ चारी की नाहिं कहते हैं,
रिश्वत लेना मना ये करते हैं, सब ही ये सच्चे गुरुवर हैं,
फरमान ८

हैं राष्ट्र हितैषी ये सब ही, विश्वशांति के पैगम्बर भी,
आत्मशांति इन्होंने करदीनी, अब आओ सभी स्वागत करलें,
फरमान ९

आओ भाई आओ दर्शन करलें, हाथ जोड़ जोड़ कर वंदन करलें
सिर को इनके चरणों धर दें, जितेन्द्र कहे दु ख हरने को,
फरमान १०

दुर्गुण

वस्त्रों का विलासितापूर्ण प्रदर्शन एक दुर्गुण है भले मनुष्यों को चाहिये कि वे इससे बचने का भरसक प्रयत्न करें।

पोशाक

सादी पोशाक में उपयोगिता होती है और उससे आराम मिलता है।

हे युवानो

वह व्यक्ति जो भोगविलास में लगा रहता है शीघ्र ही बुड्ढा हो जाता है। अत' हे युवानो ! आप अपनी युवानी को दीर्घ काल तक बनाए रखना चाहते हैं तो भोगविलास से बचें।

समय का मूल्य

नष्ट किया हुआ धन पुन प्राप्त हो सकता है मगर खोया हुआ समय दुबारा हाथ नहीं आता। अत प्रतिपल को सद्विचार और प्रभु भजन में ही बिताए।

अपव्यय न करें

जो पैसा निरर्थकआनन्द और हानिकारक भोगविलास की वस्तुए प्राप्त करने के लिये व्यय किया जाता है। वस्तुतः वह अपव्यय है।

—जेम्स एलन।

मितव्यय

जो सम्पत्ति प्राप्त करना चाहते हैं और कभी ऋणी होना नहीं चाहते उन्हें चाहिये कि अपनी आय के मुताबिक ही व्यय करें।

ईमानदारी

ईमानदारी सफलता का सब से अधिक विश्वसनीय तत्त्व है। एक दिन ऐसा जरूर आता है, जब बेईमान आदमी दुःख और विपत्ति में फंसकर अपनी बेईमानी पर पश्चाताप करने लगता है।

सत्य

ऐसा कोई भी आदमी नहीं जिसे अपनी ईमानदारी पर पश्चाताप करना पडा हो।

—जेम्स एलन।

सत्य बात

कोई भी फिजूलखर्च आदमी मालदार तो नहीं बन सकता, लेकिन फिजूलखर्च धनी कुछ ही दिनों में गरीब अवश्य बनता है।

कजूस का धन

बहुत सारा माल-दौलत जोड़कर उसे देखने वाला कजूस आदमी मालदार नहीं कहा जा सकता। क्योंकि वह स्वयं

अभावग्रस्त होता है, एव उसका जमाया हुआ धन उसके काम में भी तो नहीं आता।

बचें

धूम्रपान, नसतार, मदिरापान और जुआ खेलना आदि बुराइयों ने हजारों लोगों को विफलता, रोग और विपत्ति से आक्रान्त किया है।

अत: इन आदतों से बचें।

देखें

जिस प्रकार एक शराबी केवल तात्कालिक आनन्द को ही देखता है, उसके अंतिम पतनशील परिणाम को नहीं। वैसे ही बेईमान आदमी तात्कालिक लाभ को देखता है, लेकिन अत में होने वाले अपनी नौकरी या व्यापार के नाश को नहीं देखता।

बेईमानी के पैसे

बेईमानी से प्राप्त हुए पैसों को मयसूद के वापिस जाना है। उन्हें स्थिर रखने का कोई मार्ग नहीं है।

असफल रहें तो भी

ईमानदार यदि असफल भी रहें फिर भी वह सराहनीय ही बनता है। एव उसके चरित्र और ख्याति में तनिक भी

हानि नहीं होती।

—जेम्स एलन।

आशा-निराशा

साधन के प्रति लापरवाह रहने से ध्येय की पूर्ति नहीं हो सकती। सुख को पाना हमारा ध्येय है और उसे पाने का साधन है धर्म।

धर्म के प्रति लापरवाहों के सुख की आशा, निराशा का रूप धारण करेगी।

योग्य

वही व्यक्ति योग्य माना जाता है, जो अपनी भूलों को स्वय देख सकता है,अथवा दूसरों के द्वारा उनकी (भूलों की) ओर संकेत किये जाने पर प्रसन्न होता है।

सहानुभूति

जिस प्रकार एक मां अपने रोगी शिशु की वेदना का अनुभव करती है, उसी प्रकार सहानुभूतिपूर्ण व्यक्ति पीड़ित की वेदना का अनुभव करता है।

विनाश का कारण

स्वार्थपरता ही हमारे अपमान और विनाश का कारण है।

भूख

लालची लोग जितना अधिक पाते हैं, उतना ही अधिक पाने के लिये उनकी भूख बढ़ती जाती है।

—उत्तराध्ययन सूत्र

अज्ञान

झगड़ालू लोग अपने अज्ञान और सम्फ्रतिहीनता का ही परिचय देते हैं। ऐसे लोग व्यर्थ के वितण्डावाद में अपनी अमूल्य मानवशक्ति का अपव्यय करते हैं।

बुद्धिमान

बुद्धिमान व्यक्ति केवल अपने ही क्रोध पर अधिकार नहीं करता। वह दूसरों के अन्दर उत्पन्न होने वाले क्रोध को भी अभिभूत करना जानता है।

—"सफलता के ८ साधन' में से

वास्तविक व्योपार

मूर्ख लोग यह सोच बैठते हैं कि धोखा देना ही व्यापार है, परन्तु वास्तविक व्यापार तो विश्वास के आधार पर ही बनता है।

—जेम्स एलन।

सम्हालें

जिन लोगों को समाज में कोई अच्छाई दृष्टिगोचर नहीं

होती, उन्हें चाहिये कि वे अपने को सम्हालें। संकट उनके घर के बहुत नजदीक आ गया है, क्योंकि वे अच्छे को बुरा कहते हैं।

मनन करें

जितना भी कोई व्यक्ति सच्चा होगा, उतना ही प्रबल उसका प्रभाव होगा। नैतिकता और सच्चाई बहुत नजदीकी के साथ एक सूत्र में बंधी हुई हैं।

असत्यता से शुभ मानवीय गुणों का ह्रास होता है। इसे अवलम्ब बनाने वाले लोग अधोगति को प्राप्त होते हैं।

—एक पिलग्रिम ऑफ प्रासपेरिटि म से।

आत्म छलना

दूसरों को धोखा देकर सफलता प्राप्त करके अपने को बड़ा मानना केवल एक आत्मछलना है।

रहस्य

अन्यायपूर्वक प्राप्त किये हुए मुनाफे से समृद्धि प्राप्त नहीं होती है, उससे असफलता ही प्राप्त होती है।

लुटेरा

एक व्यापारी जो अपने ग्राहकों से अन्यायपूर्वक चीजों का अधिक मूल्य वसूल करता है, वह एक तरह का लुटेरा है। वह शनैः शनैः अपनी सफलता को विषैली बनाता

जाता है।

उसकी यह बेईमानी एक दिन अवश्य उसके व्यापार का नाश करेगी।

—जेम्स एलन।

चेष्टा करें

प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह नीचता से ऊपर उठकर प्रत्येक वस्तु में न्याय प्रिय होने की चेष्टा करे।

तुच्छता

उस आदमी से कौन मित्रता रखना चाहेगा जो थोड़ा सा मतभेद और दुर्भावना होने पर असभ्यतापूर्वक आक्रमण करता है और बेशुमार प्रलाप करने लगता है।

—"सफलता के आठ साधन' में से।

सयम की महिमा

आत्म सयम अनेक सासारिक सम्पत्तियों से श्रेष्ठतर है।

—जेम्स एलन।

आत्मविजय

जिसे अपनी चित्तवृत्तियों पर विजय प्राप्त हो जाती है, वह पूर्णरूप में अपनी विजय आत्मा पर प्राप्त कर लेता है।

—"सफलता के आठ साधन" में से।

आनद नहीं

लोग धन सम्पत्ति, भोग विलास और निष्क्रियता ही चाहते हैं और उसी को शांतिपूर्वक समृद्धि मान लेते हैं।

अपने आत्मतोष के लिये उन्हें प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं, परन्तु प्राप्त करने के बाद उन्हें अनुभव होता है कि इन वस्तुओं में कोई आनन्द नहीं है।

—जेम्स एलन।

आनद

आनद धन में नहीं, सम्पत्ति में भी आनद नहीं, किसी भी भौतिक वस्तु में आनन्द नहीं है। उनका सचय करने में कोई लाभ नहीं।

—जेम्स एलन।

मैं जानता हू

मैं ऐसे धनवान लोगों को जानता हू, जो बहुत सुखी हैं क्योंकि वे उदार, दयालु और पवित्र (सदाचारी) हैं।

मैं ऐसे धनवानों को भी जानता हूँ जो बहुत ही दु खी हैं। इसका कारण यह है कि अपने धन और साधनों का अपने ही सुख के लिये प्रयोग करके उन्होंने अपनी अंतरात्मा में अच्छापन और शुद्ध आनन्द का विकास नहीं किया है।

असम्भव

यह कहना कि "अमुक व्यक्ति ईमानदार है इसलिये उसे व्यापार में असफलता प्राप्त होती है" एक मूर्खता पूर्ण प्रलाप से कुछ भी अधिक नहा है। ईमानदारी के परिणामस्वरूप असफलता प्राप्त होना नितान्त असम्भव है।

—पश्चिमी विद्वान जेम्स एलन

नहीं कहा जा सकता

किसी दुष्ट आदमी को समृद्धिशालि आदमी नहीं कहा जा सकता। भले ही उसकी आय दस हजार पौंड प्रतिवर्ष क्यों न हो।

—सफलता के आठ साधन म से

धर्म

मनुष्य का धर्म है कि वह समृद्धि क बाहरी दृश्यमान उपकरण धन, परिवार, और अधिकार की ओर आकर्षित न हो।

विद्वानों का अभिप्राय

जो सम्पत्तिशाली लोग अनिष्टकारी प्रयोजनों में अपन धन का व्यय करते है, उन्हें किसी प्रकार भी सम्पत्तिमान नहा कहा जा सकता। वरन् जो कुछ धन सम्पत्ति, भोगविलास की

सामग्री एवं अवकाश उन्हें प्राप्त होता है उसका वे आत्म हनन के लिये ही प्रयोग करते हैं ।

निरर्थक

चारित्र धन को प्राप्त किये बिना मनुष्य नैतिक सम्पत्ति प्राप्त नहीं कर सकता । जिस व्यक्ति में ये दोनों गुण (नैतिकता और चारित्र) नहीं होंगे उसकी आर्थिक सम्पन्नता भी निरर्थक ही होगी ।

—जेम्स एलन

सफलता

चरित्रवान व्यक्ति सदैव सुख और संतोष का जीवन व्यतीत करता है । यदि उसके सम्पूर्ण जीवन का मूल्यांकन किया जाय तो सफलता ही परिणामरूप में प्राप्त होती है ।

— क्षमापना —

卐

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेर मज्झ न केणई॥

मैं सब जीवों को क्षमा करता हूँ। सब जीवो मुझे क्ष
दान करे। मेरी सब जीवों के साथ मैत्री है, किसी के सा
वैर विरोध नहीं है।

इस गाथा में जीवन विकास का अद्भुत मार्गदर्शन है
वैर विरोध से बना हुआ कलुषित एवं कषाय अग्नि से तपा हुअ
जीवन को क्षमारूपी जल शीतल एवं शान्त बना देता है
मैत्री भावरूप अमृत जीवन को अमर बना देता है। इसलिए
जीवन में वैर-विरोध का विष दूर कर यह परम मैत्री-रहस
को सिद्ध करें।